

G.S. प्वाइंटर-1

प्राचीन भारत का इतिहास

पाषाण काल

- * रॉबर्ट ब्रूस फुट थे एक — भूगर्भ-वैज्ञानिक एवं पुरातत्त्वविद्
- * भारतीय प्राग इतिहास का पिता कहा जाता है — रॉबर्ट ब्रूस फुट को
- * कोपेनहेगन संग्रहालय की सामग्री से पाषाण, कांस्य और लौह युग का त्रियुगीय विभाजन किया था — थॉमसन ने
- * पशुपालन के साक्ष्य सर्वप्रथम मिलते हैं — मध्य पाषाण काल में
- * मध्य पाषाण काल में पशुपालन के प्रमाण जहां से मिले, वह स्थान है — आदमगढ़
- * चोपानी मांडो, काकोरिया, महदहा एवं सराय नाहराबा स्थलों में से हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं — महदहा से
- * हड्डी से निर्मित आभूषण भारत में मध्य पाषाण काल में प्राप्त हुए हैं — महदहा से
- * एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल मिले हैं — दमदमा से
- * खादानों की कृषि सर्वप्रथम प्रारंभ हुई थी — नवपाषाण काल में
- * भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य मिलता है — नर्मदा घाटी से
- * मानव द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त अनाज था — जौ
- * भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं — लहुरादेव से
- * पुरापाषाण युग, नवपाषाण युग, ताम्रपाषाण युग तथा लौह युग में से चातकोलिथिक युग भी कहा जाता है — ताम्रपाषाण युग को
- * आग्नी, मेहरगढ़, कोटदीजी तथा कालीबंगा में से वह पुरास्थल, जहां से पाषाण संस्कृति से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं — मेहरगढ़
- * नवदाटोती का उत्खनन करवाया था — एच.डी. सॉकलिया ने
- * नवदाटोती अवस्थित है — मध्य प्रदेश में
- * वृहत्पाषाण स्मारकों की पहचान की गई है — मृतक को दफनाने के स्थान के रूप में
- * राख का टीला बुदिहाल, संगनकल्लू, कोतडिहवा तथा ब्रह्मगिरि में से जिस नवपाषाणिक स्थल से संबंधित है, वह है — संगनकल्लू
- * 'भीमबेटका' प्रसिद्ध है — गुफाओं के शैल चित्र के लिए
- * भारत में सर्वाधिक शैल चित्र प्राप्त हुए हैं — भीमबेटका से
- * अजंठा, भीमबेटका, बाघ तथा अमरावती में से वह स्थल जो प्रागैतिहासिक चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है — भीमबेटका
- * भीमबेटका की गुफाएं स्थित है— अब्दुल्लागंज-रायसेन (मध्य प्रदेश) में
- * गैरिक मृदभांड पात्र (ओ.सी.पी.) का नामकरण हुआ था — हस्तिनापुर में
- * ताम्र पाषाण काल में महाराष्ट्र के लोग मृतकों को घर के फर्श के नीचे दफनाते थे — उत्तर से दक्षिण की ओर
- * ब्रह्मगिरि, बुर्जहोम, चिरांद तथा मारकी में से वह स्थल जहां से मानव कंकाल के साथ कुत्ते का कंकाल भी शवाधान से प्राप्त हुआ है — बुर्जहोम
- * बुर्जहोम, कोतडिहवा, ब्रह्मगिरि एवं संगनकल्लू में से मर्त आवास के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं — बुर्जहोम से
- * किंय क्षेत्र का वह शिताश्रय जहां से सर्वाधिक मानव कंकाल मिले हैं — लेखहिया
- * भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण संस्कृति, पर्यटन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा मानव संसाधन विकास विभागों/मंत्रालयों में से संलग्न कार्यालय है — संस्कृति मंत्रालय का
- * भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक थे — जॉन मार्शल
- * राष्ट्रीय मानव संग्रहालय स्थित है — भोपाल में

सैधव सभ्यता एवं संस्कृति

- * मानव समाज वित्क्षण है, क्योंकि वह मुख्यतया आश्रित होता है—
— संस्कृति पर
- * हड़प्पा संबद्ध है — सिंधु घाटी सभ्यता से
- * सिंधु सभ्यता संबंधित है — आद्य-ऐतिहासिक युग से
- * सिंधु घाटी की सभ्यता गैर-आर्य थी, क्योंकि
— वह नगरीय सभ्यता थी
- * सिंधु घाटी सभ्यता को आर्यों से पूर्व की रखे जाने का महत्वपूर्ण कारक है — मृद्भांड
- * सिंधु घाटी संस्कृति वैदिक सभ्यता से भिन्न थी, क्योंकि
— इसके पास विकसित शहरी जीवन की सुविधाएं थीं; इसके पास चित्रलेखीय लिपि थी; इसके पास लोहे और रक्षा शस्त्रों के ज्ञान का अभाव था।
- * हड़प्पा संस्कृति की जानकारी का प्रमुख स्रोत है — पुरातात्विक खुदाई
- * हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में सही सुमेलन है—
ई.जे.एच. मैके — सुमेर से लोगों का पलायन
मार्टिनर व्हीलर — पश्चिमी एशिया से 'सभ्यता के विचार' का प्रवसन
अमलनंदा घोष — हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता के परिणामस्वरूप हुआ।
- * भारत में चांदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य मिलते हैं — हड़प्पा संस्कृति में
- * हड़प्पा में मिट्टी के बर्तनों पर सामान्यतः उपयोग हुआ था — लाल रंग का
- * मूर्ति पूजा का आरंभ माना जाता है — पूर्व आर्य (Pre Aryan) सभ्यता से
- * गाय, हथी, गैंडा तथा बाघ पशुओं में से वह जिसका हड़प्पा संस्कृति में पाई गई टेराकोटा कलाकृति में निरूपण (Representation) नहीं हुआ था — गाय
- * सुमेलित है—
प्राचीन स्थल पुरातत्वीय खोज
लोथल — गोदीबाड़ा
कालीबंगा — जुता हुआ खेत
धौलावीरा — हड़प्पा लिपि के बड़े आकार के दस चिह्नों वाला एक शिलालेख
बनावली — पक्की मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति

- * सुमेलित है—
स्थल नदी
हड़प्पा — रावी
हस्तिनापुर — गंगा
नागार्जुन कोंड — कृष्णा
पैठन — गोदावरी
- * सही सुमेलन है—
बस्ती नदी
हड़प्पा — रावी
कालीबंगा — घग्गर
लोथल — मोग्वा
रोमड़ — सतलज
- * सिंधु सभ्यता के बारे में सत्य कथन है — नगरों में नालियों की सुदृढ़ व्यवस्था थी, व्यापार और वाणिज्य उन्नत दशा में था एवं मातृदेवी की उपासना की जाती थी
- * सिंधु घाटी सभ्यता जानी जाती है — अपने नगर नियोजन के लिए, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के लिए, अपने कृषि संबंधी कार्य के लिए एवं अपने उद्योगों के लिए
- * सुमेलित है—
आतमगीरपुर — उत्तर प्रदेश
लोथल — गुजरात
कालीबंगा — राजस्थान
रोमड़ — पंजाब
- * सुमेलित है—
आतमगीरपुर — उत्तर प्रदेश
बनावली — हरियाणा
दायमाबाद — महाराष्ट्र
राखीगढ़ी — हरियाणा
- * सही सुमेलन है—
हड़प्पीय स्थल स्थिति
मांडा — जम्मू-कश्मीर
दायमाबाद — महाराष्ट्र
कालीबंगा — राजस्थान
राखीगढ़ी — हरियाणा
- * हड़प्पा संस्कृति के सिंध में अवस्थित स्थल हैं — मोहनजोदड़ो, चन्द्रदड़ो जुडेरजोदड़ो, आमरी, कोटिदीजी एवं अलीमुराद
- * चन्द्रदड़ो के उत्खनन का निर्देशन किया था — जे.एच. मैके ने
- * कालीबंगा, हड़प्पा, लोथल एवं आतमगीरपुर में से सिंधु घाटी सभ्यता का वह स्थान जो अब पाकिस्तान में है — हड़प्पा
- * रंगपुर जहां हड़प्पा की समकालीन सभ्यता थी, वह है — सौराष्ट्र (गुजरात) में

सम-सांस्कृतिक पटना पत्र

- * दधेरी एक परवर्ती हड़प्पीय पुरास्थल है — पंजाब का
- * हड़प्पा, मोहनजोदड़ो एवं लोथल में से सिंधु सभ्यता का वह स्थान जो भारत में स्थित है — लोथल (गुजरात में)
- * वह हड़प्पीय नगर, जिसका प्रतिनिधित्व लोथल का पुरातत्त्व-स्थल करता है, स्थित था — बोगवा नदी पर
- * सिंधु घाटी सभ्यता का पत्तन नगर था — लोथल
- * सिकंदरिया, लोथल, महास्थानगढ़, नागपट्टनम में से वह, जो हड़प्पा का बंदरगाह है — लोथल
- * कालीबंगन, रोपड़, पाटलिपुत्र तथा लोथल में से वह, जो सिंधु घाटी की सभ्यता से संबंधित स्थल नहीं है — पाटलिपुत्र
- * भारत का सबसे बड़ा हड़प्पन पुरास्थल है — राखीगढ़ी
- * हड़प्पा सभ्यता का सबसे बड़ा पुरास्थल है — मोहनजोदड़ो
- * सिंधु घाटी के लोग विश्वास करते थे — मातृ शक्ति में
- * सिंधु घाटी के लोग पूजा करते थे — मातृदेवी की, पशुपति की, लिंग एवं योनि की, पशुओं की, नागों की एवं वृक्षों की।
- * सिंधु-घाटी सभ्यता को खोज निकालने में जिन दो भारतीयों का नाम जुड़ा है, वे हैं — राखालदास बनर्जी (मोहनजोदड़ो की खोज) तथा दयाराम साहनी (हड़प्पा की खोज)
- * सुमेरित है—

हड़प्पा	-	दयाराम साहनी
लोथल	-	एस.आर. राव
सुरकोटडा	-	जे.पी. जोशी
धौलावीरा	-	जे.पी. जोशी
- * हड़प्पा का उत्खनन करने वाला प्रथम पुरातत्त्वविद जो इसके महत्व को नहीं समझ पाया था — ए. कनिंघम
- * आर.डी. बनर्जी, के.एन. दीक्षित, एम.एस. वत्स तथा वी.ए.स्मिथ में से वह, जो हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के उत्खनन से संबंधित नहीं थे — वी.ए.स्मिथ
- * सिंधु सभ्यता की विकसित अवस्था में हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल तथा मोहनजोदड़ो में से वह स्थल जहां से घरों में कुओं के अवशेष मिले हैं — मोहनजोदड़ो
- * सही कालक्रम है
 - नगर संस्कृति, लोहे का हल, आहत मुद्रा, सोने के सिक्के
- * सर्वप्रथम मानव ने जिस धातु का उपयोग किया था, वह है — ताँबा
- * हाथी दांत का पैमाना हड़प्पीय संदर्भ में मिला है — लोथल से
- * हड़प्पाकालीन स्थलों में अभी तक जिस धातु की प्रप्ति नहीं हुई है, वह है — लोहा
- * आतमगीरपुर, लोथल, मोहनजोदड़ो तथा बनावती में से वह स्थल जो घग्गर और उसकी सहायक नदियों की घाटी में स्थित है — बनावती

- * सही कथन है—
 - मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, रोपड़ एवं कालीबंगा सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं। हड़प्पा के लोगों ने सड़कों तथा नालियों के जात के साथ नियोजित शहरों का विकास किया।
- * कथन (A) : मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा नगर अब विलुप्त हो गए हैं।
कारण (R) : वह खुदाई के दौरान प्रकट हुए थे।
— (A) और (R) दोनों सही हैं, किंतु (R) सही स्पष्टीकरण नहीं है (A) का
- * हड़प्पन संस्कृति के संदर्भ में शैलकृत स्थापत्य के प्रमाण मिले हैं।
— धौलावीरा से
- * धौलावीरा जिस राज्य में स्थित है, वह है — गुजरात
- * वह हड़प्पीय (Harappan) नगर जो तीन भागों में विभक्त है — धौलावीरा
- * एक उन्नत जल-प्रबंधन व्यवस्था का सक्ष्य प्राप्त हुआ है— धौलावीरा से
- * कुतासी, धौलावीरा, लोथल एवं कालीबंगा में से वह स्थल जहां से द्विशव संस्कार (डबल बरियल) का प्रमाण मिला है — लोथल एवं कालीबंगा
- * हड़प्पन स्थल सनौली के अभी हाल में उत्खननों से प्राप्त हुए हैं — मानव शवाधान
- * वस्त्रों के लिए कपास की खेती का आरंभ सबसे पहले किया गया — भारत में
- * सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ सही कथन है—
 - यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी तथा उसमें धार्मिक तत्व, यद्यपि उपस्थित था, वर्चस्वशाली नहीं था। उस काल में भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।
- * सिंधु सभ्यता के संदर्भ में सही कथन है
 - वे देवियों और देवताओं, दोनों की पूजा करते थे।
- * सिंधु-घाटी सभ्यता से संबद्ध विख्यात वृषभ-मुद्रा प्राप्त हुई थी — मोहनजोदड़ो से
- * वह पशु जिनका अंकन हड़प्पा संस्कृति की मुहरों पर नहीं मिलता है — घोड़ा, गाय एवं ऊँट
- * जिस पशु के अवशेष सिंधु घाटी सभ्यता में प्राप्त नहीं हुए हैं, वह है — शेर
- * मृण्मण्डिका पर उत्कीर्ण सींगवृत्त देवता की कृति प्राप्त हुई है — कालीबंगा से
- * वह सभ्यता जो नील नदी के तट पर पनपी — मिस्र की सभ्यता
- * माया - एजटेक - मुइस्का - इका सभ्यताओं का उत्तर से दक्षिण का सही क्रम है — एजटेक - माया - मुइस्का - इका
- * लेखन कला की उचित प्रणाली विकसित करने वाली सर्वप्रथम प्राचीन सभ्यता थी — सुमेरिया

वैदिक काल

- * 'आर्य' शब्द इंगित करता है — श्रेष्ठ वंश को
- * क्लासिकीय संस्कृत में 'आर्य' शब्द का अर्थ है — एक उत्तम व्यक्ति
- * सबसे पुराना वेद है — ऋग्वेद
- * 'त्रयी' नाम है — तीन वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद) का
- * वह वैदिक ग्रंथ जिसमें 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम नामोल्लेख मिलता है — ऋग्वेद
- * वर्णव्यवस्था से संबंधित 'पुरुष सूक्त' मूलतः पाया जाता है— ऋग्वेद में
- * सुमेलित है—

अथर्ववेद	—	औषधियों से संबंधित
ऋग्वेद	—	ईश्वर महिमा
यजुर्वेद	—	बलिदान विधि
सामवेद	—	संगीत
- * सुमेलित है—

ऋग्वेद	—	स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं
यजुर्वेद	—	स्तोत्र एवं कर्मकांड
सामवेद	—	संगीतमय स्तोत्र
अथर्ववेद	—	तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण
- * ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद चार वेदों में से वह, जिसमें जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है — अथर्ववेद
- * ऋग्वेद में ऋचाएं हैं — 1028
- * ऋग्वेद में मंडल हैं — 10
- * सुमेलित है—

वेद	ब्राह्मण
ऋग्वेद	— ऐतरेय
सामवेद	— पंचवीश
अथर्ववेद	— गोपथ
यजुर्वेद	— शतपथ
- * ऋग्वेद का वह मंडल जो पूर्णतः 'सोम' को समर्पित है — नैषां मंडल
- * 'यज्ञ' संबंधी विधि-विधानों का पता चलता है — यजुर्वेद से
- * यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद में से वह, जिसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है — सामवेद
- * तक्षशिला, अतरंजीखेड़ा, कौशाम्बी एवं हस्तिनापुर में से वह स्थल जिसकी खुदाई से लौह धातु के प्रचलन के प्राचीनतम प्रमाण मिले हैं — अतरंजीखेड़ा

- * उपनिषदों का मुख्य विषय है — दर्शन
- * ऋग्वेद, परवर्ती संहिताएं, ब्राह्मण तथा उपनिषद में से वह वैदिक साहित्य जिसमें मोक्ष की चर्चा मिलती है — उपनिषद
- * मोक्ष शब्द का सबसे पहले उल्लेख हुआ है — श्वेताश्वर उपनिषद में
- * अध्यात्म ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम का संवाद जिस उपनिषद में प्राप्त होता है, वह है — कठोपनिषद
- * उपनिषद काल के राजा अश्वपति शासक थे — केकय के
- * वैदिक साहित्य का सही क्रम है — वैदिक संहिताएं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
- * आरंभिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है — सिंधु
- * वैदिक नदी अस्किनी की पहचान की जाती है — चेनाव नदी से
- * ऋग्वेद में जिन नदियों का उल्लेख अफगानिस्तान के साथ आर्यों के संबंध का सूचक है, वह हैं — कुशा, क्रमु
- * सुमेलन है—

वैदिक नदियां	आधुनिक नाम
कुशा	— काबुल
परुष्णी	— रावी
सदानीरा	— गंडक
सुतुद्री	— सतलज
- * वह प्रथा-चतुष्टय जो वेदोत्तर काल में प्रचलित हुई — ब्रह्मचर्य - गृहस्थाश्रम - वानप्रस्थ - संन्यास
- * "धर्म" तथा "ऋत" भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के एक केंद्रीय विचार को चित्रित करते हैं। इस संदर्भ में सत्य कथन है — धर्म व्यक्ति के दायित्वों एवं स्वयं तथा दूसरों के प्रति व्यक्तिगत कर्तव्यों की संकल्पना था; ऋत मूलभूत नैतिक विधान था, जो सृष्टि और उसमें अंतर्निहित सारे तत्वों के क्रियाकलापों को संघालित करता था।
- * अग्नि, बृहस्पति, द्यौस तथा इंद्र वैदिक देवताओं में उनका पुरोहित माना जात था — बृहस्पति को
- * लोपामुद्रा, गार्गी, लीलावती तथा सावित्री में से वह ब्रह्मवादिनी जिसने कुछ वेद मंत्रों की रचना की थी — लोपामुद्रा
- * ऋग्वैदिक काल में निष्क शब्द का प्रयोग एक स्वर्ण आभूषण के लिए होता था, किंतु परवर्ती काल में उसका प्रयोग हुआ — सिक्का में
- * ऋग्वैदिक काल में निष्क आभूषण था — गला का
- * 14वीं सदी ई. पूर्व का बोगाजकोई अभिलेख महत्वपूर्ण है, क्योंकि — यहां से प्राप्त अभिलेखों में वैदिक देवताओं एवं देवियों का नामोल्लेख प्राप्त होता है

- ★ मान सेहरा, शहबाजगढ़ी, बोगजकोई तथा जूनागढ़ अभिलेखों में से वह, जो ईरान से भारत में आर्यों के आने की सूचना देता है

— बोगजकोई

- ★ शंकराचार्य, एनी बेसेंट, विवेकानंद तथा बाल गंगाधर तिलक में से वह, जिसने आर्यों के आदि देश के बारे में लिखा था— बाल गंगाधर तिलक
- ★ 'पुरुष मेघ' का उल्लेख हुआ है — शतपथ ब्राह्मण में
- ★ शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित राजा विदेघ माधव से संबंधित ऋषि थे — ऋषि गौतम राहुगण

- ★ उत्तर वैदिक काल में से आर्य संस्कृति का धुर समझा जाता था — अंग, मगध को

- ★ गोत्र शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम हुआ था — ऋग्वेद में
- ★ गोत्र प्रथा की स्थापना हुई थी — उत्तर वैदिक काल में
- ★ पूर्व-वैदिक आर्यों का धर्म प्रमुखतः था — प्रकृति पूजा और यज्ञ
- ★ ऋग्वेद काल में जनता मुख्यतया विश्वास करती थी — बलि एवं कर्मकांड में

- ★ ऋग्वेद में उल्लिखित प्रसिद्ध 'दश-राजाओं' का युद्ध लड़ा गया था — परुष्णी नदी के किनारे

- ★ सिंधु, सरस्वती, वितस्ता तथा यमुना में से वह नदी जिसे ऋग्वेद में 'मातेतमा', 'देवीतमा' एवं 'नदीतमा' के रूप में संबोधित किया गया है — सरस्वती

- ★ ऋग्वैदिक आर्यों के पंचजन थे — रघु, द्रुह्यु, पुरु, अनु एवं तुर्वसु
- ★ प्राचीन काल में आर्यों के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन था— शिकार
- ★ ऋग्वेद में उल्लिखित 'यव' शब्द जिस कृषि उत्पाद हेतु प्रयुक्त किया गया है, वह है — जौ
- ★ वैदिक युग में प्रचलित लोकप्रिय शासन प्रणाली थी — वंश परंपरागत राजतंत्र

- ★ सभा और सभिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है — अथर्ववेद में

- ★ 'आबुर्वेद' अर्थात् 'जीवन का विज्ञान' का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है — अथर्ववेद में

- ★ ऋग्वेदिक धर्म था — बहुदेववादी
- ★ सर्वाधिक ऋग्वैदिक सूक्त समर्पित हैं — इंद्र को
- ★ ऋग्वेद में इंद्र के बाद सर्वाधिक संख्या में मंत्र संबंधित हैं — अग्नि से
- ★ ऋग्वेद में बुद्ध-देवता समझा जाता है — इंद्र
- ★ पूर्व वैदिक आर्यों का सर्वाधिक लोकप्रिय देवता था — इंद्र
- ★ 800 से 600 ईसा पूर्व का काल जुड़ा है — ब्राह्मण युग से
- ★ गायत्री मंत्र के नाम से प्रसिद्ध मंत्र सर्वप्रथम मिलता है — ऋग्वेद में

- ★ गायत्री मंत्र की रचना की थी — विश्वामित्र ने
- ★ सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित संकेतक हैं

— पुराणों के

- 18
- ★ पुराणों की संख्या हैं
- ★ 'श्रीमद्भागवद्गीता' मौलिक रूप में लिखी गई थी — संस्कृत में
- ★ महाभारत मूलतः जानी जाती थी — जयसंहिता के रूप में
- ★ हिंदू पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन हेतु जिस सर्प ने रस्सी के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया, वह है — वासुकी
- ★ अछूत की अवधारणा स्पष्ट रूप से उद्भूत हुई थी — धर्मशास्त्र के समय में

- मुंडक उपनिषद् से
- ★ 'सत्यमेव जयते' शब्द लिया गया है
- ★ सत्यकाम जांबात की कथा, जो अनब्याही मां होने के लांछन को चुनौती देती है, उल्लेखित है — छांदोग्य उपनिषद् में

- ब्राह्मी
- ★ ऋग्वेद की मूल लिपि थी
- ★ वैदिक कर्म कांड में 'होता' का संबंध है — ऋग्वेद से

- ईरान से
- ★ अवेस्ता और ऋग्वेद में समानता है। अवेस्ता संबंधित है

- गाय को
- ★ वैदिक काल में 'अघन्या' माना गया है
- ★ ऋग्वैदिक काल के प्रारंभ में महत्वपूर्ण मूल्यवान संपत्ति समझा जाता था — गाय को

- कोश
- ★ प्राचीन भारतीय समाज के प्रसंग में, कुल, वंश, कोश तथा गोत्र शब्दों में से वह शब्द जो शेष तीन के वर्ग का नहीं है
- ★ संस्कारों की संख्या है — 16

- उपाध्याय
- ★ जीविकोपार्जन हेतु 'वेद-वेदांग' पढ़ाने वाला अध्यापक कहलाता था

बौद्ध धर्म

- ★ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था — 563 ई. पू. में
- ★ बुद्ध के जीवन की वह घटना जिसे 'महाभिनिष्क्रमण' के रूप में जाना जाता है — उनका गृहत्याग
- ★ गौतम बुद्ध की मां संबंधित थीं — कोलिय वंश से
- ★ बुद्ध का जन्म हुआ था — लुंबिनी में
- ★ गौतम बुद्ध के बचपन का नाम था — सिद्धार्थ
- ★ बसाढ़ स्तंभ अभिलेख, निगली सागर स्तंभ अभिलेख, रामपुरवा स्तंभ अभिलेख तथा रुमिनदेई स्तंभ अभिलेख में से वह एक अभिलेख जो इस परंपरा की पुष्टि करता है कि गौतम बुद्ध का जन्म लुंबिनी में हुआ था? — रुमिनदेई स्तंभ अभिलेख

संन-सांख्यिक घटना चक्र

- * अशोक, कनिष्क, हर्ष तथा धर्मपाल में से वह, जिसके एक अभिलेख से सूचना मिलती है कि शाक्यगुनि बुद्ध का जन्म लुम्बिनी में हुआ था
— मौर्य शासक अशोक
- * महात्मा बुद्ध का 'महापरिनिर्वाण' हुआ
— मल्ल गणराज्य की राजधानी कुशीनगर में
- * महापरिनिर्वाण मंदिर अवस्थित है — कुशीनगर में
- * अवंति, गांधार, कोसल एवं मगध राज्यों में से वह, जिनका संबंध बुद्ध के जीवन से था — कोसल एवं मगध
- * गौतम बुद्ध द्वारा अपने धर्म में दीक्षित किया जाने वाला अंतिम व्यक्ति था — सुभद्र
- * बुद्ध ने अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु बिताई थी — वैशाखी में
- * बौद्ध मत में निर्वाण की अवधारणा की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या करता है — तृष्णारूपी अग्नि का शमन
- * आतार कातम थे
— बुद्ध के एक गुरु जो सांख्य दर्शन के आचार्य थे
- * महात्मा बुद्ध ने अपना पहला 'उपदेश' (धर्मचक्रप्रवर्तन) दिया था — सारनाथ में
- * बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश दिए थे — श्रावस्ती में
- * बुद्ध कौशांबी आए थे — उदयन के राज्य-काल में
- * बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् प्रथम बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की गई — महाकस्सप द्वारा
- * प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था — राजगृह की सप्तपर्णि गुफा में
- * कश्मीर में कनिष्क के शासनकाल में, जो चतुर्थ बौद्ध संगीति आयोजित हुई थी, उसकी अध्यक्षता की थी — वसुमित्र ने
- * बौद्ध धर्म की महायान शाखा औपचारिक रूप से प्रकट हुई — कनिष्क के शासनकाल में
- * प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ बौद्ध संगीतियों के आयोजन स्थलों का सही क्रम है — राजगृह, वैशाखी, पाटलिपुत्र एवं कुंडलवन
- * द्वितीय बौद्ध समिति का आयोजन हुआ था — काशी (वाराणसी) में
- * प्रथम बौद्ध समिति का आयोजन हुआ था — अजातशत्रु के शासनकाल में
- * द्वितीय बौद्ध सभा का आयोजन किया था — कालाशोक ने
- * बुद्ध के जीवन की चार महत्वपूर्ण घटनाएं एवं उनसे संबंधित स्थलों का सुमेलन इस प्रकार है—

घटना	स्थल
जन्म	— लुम्बिनी
ज्ञानप्राप्ति	— बोधगया
प्रथम प्रवचन	— सारनाथ
निधन	— कुशीनगर

- * भारतीय कला में बुद्ध के जीवन की वह घटना जिसका चित्रण 'मृग सहित चक्र' द्वारा हुआ है — प्रथम उपदेश
- * सही सुमेलन है—

अर्थ	चित्र
जन्म	— कमल
प्रथम प्रवचन	— धर्मचक्रप्रवर्तन
महाबोधि	— बोधि वृक्ष
त्याग	— घोड़ा
- * करमापा तामा तिब्बत के बुद्ध संप्रदाय के जिस वर्ग का है, वह है — कंग्यूपा
- * महात्मा बुद्ध के संबंध में सही कथन हैं—
 1. उनका जन्म कपिलवस्तु (लुम्बिनी) में हुआ था।
 2. उन्होंने बोधगया में ज्ञान प्राप्त किया था।
 3. उन्होंने वैदिक धर्म को अस्वीकार किया था।
 4. उन्होंने आर्य सत्य का प्रचार किया था।
- * बोधगया में महाबोधि मंदिर बनाया गया, जहां — गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ
- * बोधगया में 'बोधि वृक्ष' को नष्ट कर दिया था — शशांक ने
- * प्रमुख बौद्ध पवित्र स्थल, जो निरंजना नदी पर स्थित था — बोधगया
- * बुद्ध के उपदेश संबंधित हैं — आचरण की शुद्धता व पवित्रता से
- * बुद्ध के जीवनकाल में ही संघ प्रमुख होना चाहता था — देवदत्त
- * गौतम बुद्ध ने अपनी मृत्यु के उपरांत बौद्ध संघ के नेतृत्व के लिए नामित किया था — किसी को भी नहीं
- * अष्टांग मार्ग की संकल्पना, अंग है — धर्मचक्रप्रवर्तन सुत्त की विषयवस्तु का
- * गौतम बुद्ध के बारे में सत्य कथन हैं — वे कर्म में विश्वास करते थे, आत्मा का शरीर में परिवर्तन मानते थे एवं निर्वाण प्राप्ति में विश्वास करते थे
- * बौद्ध संघ में भिक्षुणी के रूप में स्त्रियों के प्रवेश की अनुमति बुद्ध द्वारा दी गई थी — वैशाखी में
- * 'त्रिपिटक' है — बुद्ध के उपदेशों का संग्रह
- * 'त्रिपिटक' ग्रंथ संबंधित है — बौद्ध धर्म से
- * वह बौद्ध ग्रंथ जिसमें संघ जीवन के नियम प्राप्त होते हैं — विनय पिटक
- * वह बौद्ध साहित्य जिसमें महात्मा बुद्ध के 'नैतिक एवं सिद्धांत' संबंधित प्रवचन संकलित हैं — सुत्त पिटक
- * वह बौद्ध साहित्य जिसमें बुद्ध के 'दार्शनिक सिद्धांत' का उल्लेख है — अभिधम्मपिटक
- * अशोकाराम विहार स्थित था — पाटलिपुत्र में

- * विश्व का सबसे ऊँचा कहा जाने वाला 'विश्व शांति स्तूप' स्थित है
— राजगीर (बिहार) में
- * बुद्ध की 80 फुट बड़ी प्रतिमा जो बोधगया में है, निर्मित की गई थी
— जापानियों के द्वारा
- * सर्वप्रथम 'स्तूप' शब्द मितता है
— ऋग्वेद में
- * सारनाथ, सांची, बोधगया एवं कुशीनारा में से वह स्तूप-स्थल, जिसका संबंध भगवान बुद्ध के जीवन की किसी घटना से नहीं रहा है, वह है
— सांची
- * 'संसार अस्थिर और क्षणिक है' का बौद्ध, जैन, गीता एवं वेदांत में से जिससे संबंध है, वह है
— बौद्ध
- * 'एशिया के ज्योति पुंज' के तौर पर जाना जाता है — गौतम बुद्ध को
- * सर एडविन एर्नाल्ड की पुस्तक 'द लाइट ऑफ दी एशिया' आधारित है
— तलितविस्तार पर
- * गौतम बुद्ध को एक देवता का स्थान जिस राजा के युग में प्राप्त हुआ, वह है
— कनिष्क
- * भारत में पहले जिन मानव प्रतिमाओं को पूजा गया, वह थी— बुद्ध की
- * देश में जिस धर्म के लोगों ने मूर्ति पूजा की नींव रखी थी, वह है
— बौद्ध धर्म
- * गांधार शैली की मूर्ति कला में बुद्ध के सारनाथ में हुए प्रथम धर्मोपदेश से संबद्ध प्रवचन मुद्रा का नाम है
— धर्मचक्र
- * बुद्ध की खड़ी प्रतिमा बनाई गई
— कुषाण काल में
- * भगवान बुद्ध की प्रतिमा कभी-कभी एक हस्त मुद्रा युक्त दिखाई गई है, जिसे 'भूमिस्पर्श मुद्रा' कहा जाता है। यह प्रतीक है
— मार के प्रलोभनों के बावजूद अपनी शुद्धता और शुद्धता का साक्षी होने के लिए बुद्ध का धरती का आह्वान
- * भूमिस्पर्श मुद्रा की सारनाथ बुद्ध मूर्ति संबंधित है — गुप्त काल से
- * कथन (A) : कुशीनगर मल्ल गणराज्य की राजधानी थी।
कारण (R) : महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण कुशीनगर में हुआ था।
— दोनों A और R सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है
- * सुगेलित हैं—
लोथल : प्राचीन गोदी क्षेत्र
सारनाथ : बुद्ध का प्रथम धर्मोपदेश
सांची : अशोक का सिंह स्तंभ शीर्ष
नालंदा : बौद्ध अधिगम का महान पीठ
- * महायान बौद्ध धर्म में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर को और जिस अन्य नाम से जानते हैं, वह है
— पद्मपाणि
- * भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में सत्य कथन हैं
— बोधिसत्व अपने प्रबोध के मार्ग पर बढ़ता हुआ करुणामय है।
बोधिसत्व समस्त सचेतन प्राणियों को उनके प्रबोध के मार्ग पर चलने में सहप्रयत्न करने के लिए स्वयं की निर्वाण प्राप्ति विलंबित करता है।
- * हीनयान अवस्था का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित शैलकृत चैत्यगृह स्थित है
— कर्तव में
- * प्रथम शताब्दी ईस्वी में जिस भारतीय बौद्ध भिक्षुक को चीन भेजा गया था, वह है
— नागार्जुन
- * शून्यता के सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रतिपादन करने वाले बौद्ध दार्शनिक का नाम है
— नागार्जुन
- * नागार्जुन जिस बौद्ध संप्रदाय के थे, वह है
— माध्यमिक
- * विक्रमशिला, वाराणसी, गिरनार एवं उज्जैन में से बौद्ध शिक्षा का केंद्र है
— विक्रमशिला
- * वल्लभी विश्वविद्यालय स्थित था
— गुजरात में
- * नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापन का युग है
— गुप्त
- * नालंदा विश्वविद्यालय के संस्थापक थे
— कुमारगुप्त
- * नालंदा विश्वविद्यालय विश्वप्रसिद्ध था — बौद्ध धर्म दर्शन के लिए
- * कथन (A) : बारहवीं शताब्दी के अंत तक नालंदा महाविहार का पतन हो गया।
कारण (R) : महाविहार को राजकीय प्रश्रय मितना बंद हो गया था।
— दोनों A और R सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
- * 'नव नालंदा महाविहार' विख्यात है
— पाती अनुसंधान संस्थान के लिए
- * बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों में समान रूप से विद्यमान था
— वेद प्रामाण्य के प्रति अनास्था, कर्मकांडों की फलप्रता का निषेध, प्राणियों की हिंसा का निषेध (अहिंसा)
- * बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य का सही क्रम है
— दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख का निरोध है, दुःख निरोध का मार्ग है
- * बौद्ध तथा जैन दोनों ही धर्म विश्वास करते हैं कि
— कर्म तथा पुनर्जन्म के सिद्धांत सही हैं
- * कथन (A) : पुनर्जन्म नहीं होता है।
कारण (R) : आत्मा की सत्ता नहीं है।
— A गलत है, किंतु R सही है
- * बौद्ध धर्म के विषय में सही कथन हैं
— उसने वर्ण एवं जाति को अस्वीकार नहीं किया। उसने ब्राह्मण वर्ण की सर्वोच्च सामाजिक कोटि को चुनौती दी।
उसने कुछेक शिल्पों को निम्न माना।

संन-सामयिक घटना

- ★ बौद्ध धर्म के विस्तार के कारणों में सम्मिलित थे—
— धर्म की सादगी, दलितों के लिए विशेष अपील, धर्म की मिशनरी भावना, स्थानीय भाषा का प्रयोग
- ★ आरम्भिक मध्ययुगीन समय में बौद्ध धर्म का पतन जिन कारणों से शुरू हुआ, वह हैं — उस समय तक बुद्ध, विष्णु के अवतार समझे जाने लगे और वैष्णव धर्म का हिस्सा बन गए।
- ★ कुछ शैलकृत बौद्ध गुफाओं को चैत्य कहते हैं, जबकि अन्य को विहार। दोनों में अंतर है, कि — चैत्य पूजा-स्थल होता है, जबकि विहार बौद्ध भिक्षुओं का निवास-स्थान है
- ★ वह बौद्ध शाखा, जो सुल्तानी युग में सबसे प्रभावशाली थी

— वज्रयान

जैन धर्म

- ★ जैन धर्म के संस्थापक हैं — ऋषभ देव
- ★ जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे — ऋषभदेव
- ★ जैन 'तीर्थंकर' पार्श्वनाथ मुख्यतः संबंधित थे — वाराणसी से
- ★ महावीर स्वामी का जन्म हुआ था — कुंडग्राम में
- ★ महावीर जैन की मृत्यु हुई थी — पावापुरी में
- ★ तीर्थंकर शब्द संबंधित है — जैन से
- ★ जैन तीर्थंकरों के क्रम में अंतिम थे — महावीर
- ★ चंद्रप्रभु, नाथमुनि, नेमि तथा संभव में से वह, जो जैन तीर्थंकर नहीं था — नाथमुनि
- ★ प्रभासगिरि जिनका तीर्थ स्थल है, वे हैं — जैन
- ★ जैन धर्म में 'पूर्ण ज्ञान' के लिए शब्द है — कैवल्य
- ★ त्रिरत्न सिद्धांत सम्यक धारण, सम्यक चरित्र एवं सम्यक ज्ञान जिस धर्म की महिमा है, वह है — जैन धर्म
- ★ अणुव्रत सिद्धांत का प्रतिपादन किया था — जैन धर्म ने
- ★ स्वादवाद सिद्धांत है — जैन धर्म का
- ★ जैन दर्शन के अनुसार सृष्टि की रचना एवं पालन-पोषण — सार्वभौमिक विधान से हुआ है
- ★ अनेकांतवाद बौद्ध मत, जैन मत, सिख मत तथा वैष्णव मत में से जिसका क्रोड सिद्धांत एवं दर्शन है, वह है — जैन मत
- ★ बौद्ध धर्म, जैन धर्म, हिंदू धर्म तथा इस्लाम में से वह धर्म जो 'विश्व विनाशकारी प्रलय' की अवधारणा में विश्वास नहीं करता — जैन धर्म
- ★ जैन धर्म का आधारभूत बिंदु है — अहिंसा
- ★ यापनीय एक संप्रदाय था — जैन धर्म का
- ★ बारह अंग, बारह उपांग, चौदह पूर्व तथा चौदह उपपूर्व में से वह, जो सबसे पूर्वकालिक जैन ग्रंथ कहलाता है — चौदह पूर्व

- ★ प्रारम्भिक जैन साहित्य जिस भाषा में लिखे गए, वह है — अर्ध-मागधी
- ★ चंपा, पावा, समेद शिखर तथा ऊर्जवंत में से वह स्थल, जो पार्श्वनाथ से संबद्ध होने के कारण जैन-सिद्ध क्षेत्र माना जाता है — समेद शिखर
- ★ थेरीगाथा, आचारांगसूत्र, सूत्रकृतांग तथा बृहत्कल्पसूत्र में से वह, जो आरम्भिक जैन साहित्य का भाग नहीं है — थेरीगाथा
- ★ जैन संप्रदाय में प्रथम विभाजन के समय श्वेतांबर संप्रदाय के संस्थापक थे — स्थूलभद्र
- ★ महावीर का प्रथम अनुयायी था — जमाति
- ★ वह जैन समाज जिसमें अंतिम रूप से श्वेतांबर आगम का संपादन हुआ — पाटलिपुत्र
- ★ सत्य कथन हैं —
— गौतम बुद्ध की माता कोटिय राजवंश की राजकुमारी थीं, 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ बनारस से थे।
- ★ प्राचीन जैन धर्म के संबंध में सत्य कथन हैं—
— भद्रबाहु के नेतृत्व में दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रचार हुआ। 'पाटलिपुत्र' में हुई परिषद के पश्चात् जो जैन धर्म के लोग स्थूलबाहु के नेतृत्व में रहे, वे श्वेतांबर कहलाए। प्रथम शतक ई.पू. में जैन धर्म को कलिंग के राजा खारवेल का समर्थन मिला
- ★ जैन सिद्धांत के अनुरूप कथन हैं —
— कर्म को विनष्ट करने का सुनिश्चित मार्ग तपश्चर्या है, प्रत्येक वस्तु में, चाहे वह सूक्ष्मतम कण हो, आत्मा होती है, कर्म आत्मा का विनाशक है और अमश्व इसका अंत करना चाहिए।
- ★ 'समाधि मरण' से संबंधित है — जैन दर्शन से
- ★ सत्य कथन हैं —
— दक्षिण भारत के इक्ष्वाकु शासक बौद्धमत के समर्थक थे, पूर्वी भारत के पाट शासक बौद्धमत के समर्थक थे
- ★ 'आजीवक' संप्रदाय के संस्थापक थे — मस्खतिगोसाल
- ★ वह संप्रदाय, जो नियति की अटलता में विश्वास करता था — आजीवक
- ★ बराबर की गुफाओं का उपयोग आश्रयगृह के रूप में किया — आजीविकों ने
- ★ उत्तर प्रदेश में बौद्ध एवं जैनियों दोनों की प्रसिद्ध तीर्थस्थली है — कौशांबी
- ★ सही कथन हैं—
— भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ अरुणाचल प्रदेश में है, खजुराहो के मंदिर चंदेल राजाओं द्वारा बनाए गए और होयसलेश्वर मंदिर शिव को समर्पित है।

सम-सांख्यिक घटना का

- * श्रवणबेलगोला में गोमटेश्वर की विशाल प्रतिमा स्थापित करवाई थी — चामुंडराय ने
- * महान धार्मिक घटना, महामस्तकागिषेक संबंधित है — बाहुबली से
- * बाहुबली को पुत्र माना जाता है — प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का

शैव, भागवत धर्म

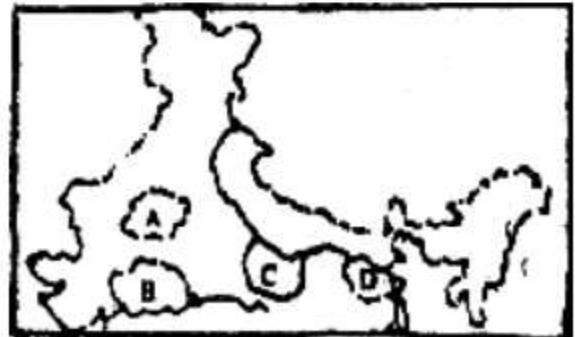
- * प्राचीन भारत के विश्वोत्पत्ति (Cosmogonic) विषयक धारणाओं के अनुसार चार युगों के चक्र का क्रम इस प्रकार है — कृत, त्रेता, द्वापर और कलि
- * आजीवक, मत्तमयूर, मयमत तथा ईशानशिवगुरुदेवपद्धति में से वह, जो प्राचीन भारत में शैव संप्रदाय था — मत्तमयूर
- * अर्धनारीश्वर मूर्ति में आधा शिव तथा आधा पार्वती प्रतीक है — देव और उसकी शक्ति का योग
- * 'नयनार' थे — शैव धर्मानुयायी
- * पोबगई, तिरुज्जान, पूडम तथा तिरुमंगई में से वह, जो अलवार संत नहीं था — तिरुज्जान
- * भागवत संप्रदाय के विकास में सर्वाधिक योगदान दिया था — गुप्त ने
- * भागवत धर्म के प्रवर्तक थे — कृष्ण
- * सर्वप्रथम देवकी के पुत्र कृष्ण का वर्णन मिलता है — छांदोग्य उपनिषद में
- * वासुदेव कृष्ण की पूजा सर्वप्रथम प्रारंभ की — भागवतों ने
- * वह देवता जिसे कला में हल लिए प्रदर्शित किया गया है — बतराम
- * भागवत संप्रदाय में भक्ति के रूपों की संख्या है — 9
- * हेलियोडोरस का बेसनगर अभिलेख संदर्भित है — वासुदेव से
- * भागवत धर्म से संबंधित प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य है — हेलियोडोरस का बेसनगर अभिलेख
- * भागवत धर्म का ज्ञात सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है — बेसनगर का गरुड़ स्तंभ
- * 'बेसनगर अभिलेख' का हेलियोडोरस निवासी था — तक्षशिला का
- * विष्णु के जिस अवतार को सागर से पृथ्वी का उद्धार करते हुए अंकित किया जाता है, वह है — वाराह
- * छठी शताब्दी ई.पू. के संदर्भ में भारत में आस्तिक और नस्तिक संप्रदायों में विभेदक लक्षण है — वेदों की प्रामाणिकता में आस्था
- * मोक्ष के साधन के रूप में जन्म, कर्म तथा भक्ति को समान महत्व देता है — भगवद्गीता

- * प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित हैं — उपनिषद, ब्रह्मसूत्र एवं भगवद्गीता
- * वह प्राचीन स्थल जहां 60,000 मुनियों की सभा में संपूर्ण महाभारत-कथा का वाचन किया गया था — नैमिषारण्य
- * रामायण का वह कांड जिसमें राम और हनुमान की पहली बैठ का वर्णन है — किष्किन्धा कांड
- * पुरी में 'रथयात्रा' निकाली जाती है— भगवान जगन्नाथ के सम्मान में
- * नासिक में कुंभ मेला लगता है — गोदावरी नदी के तट पर
- * सुमेलित है—

धर्म	पवित्र स्थल
जैन धर्म	— पावपुरी
हिंदू धर्म	— वाराणसी
इस्लाम धर्म	— मदीना
ईसाई धर्म	— वेटिकन

छठी शती ई.पू. : राजनीतिक दशा

- * भारत के प्राचीनतम प्राप्त सिक्के — चांदी के थे
 - * सुमेलित हैं—
- | राजा | राज्य |
|-----------|----------|
| प्रद्योत | - अवन्ति |
| उदयन | - वत्स |
| प्रसेनजित | - कोसल |
| अजातशत्रु | - मगध |
- * अभिलेखीय साक्ष्य से प्रकट होता है कि नंद राजा के आदेश से एक नहर खोदी गई थी — कलिंग में
 - * उज्जैन का प्राचीनकाल में नाम था — अवन्तिका
 - * मानचित्र में A, B, C, D द्वारा अंकित स्थल हैं



— मत्स्य, अवन्ति, वत्स, अंग

सम-सामयिक घटना बहा

- ★ प्राचीन नगर जो महाभारत और महाभाष्य दोनों में उल्लेखित है
— मध्यमिका एवं विराटनगर
- ★ पाटलिपुत्र के संस्थापक थे — उदयिन
- ★ चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक महान, चंद्रगुप्त विक्रमादित्य एवं कनिष्क में से पाटलिपुत्र को जिस शासक ने सर्वप्रथम अपनी राजधानी बनाया, वह है
— चंद्रगुप्त मौर्य
- ★ सर्वप्रथम पाटलिपुत्र का राजधानी के रूप में चयन किया गया
— उदयिन द्वारा
- ★ उदयन-वासवदत्ता की दंतकथा संबंधित है — उज्जैन से
- ★ प्रथम मगध साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ था — ई.पू. छठवीं शताब्दी में
- ★ गंधार, कम्बोज, काशी तथा मगध में से वह, जो ईसा पूर्व छठीं शताब्दी में, प्रारंभ में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली नगर राज्य था — काशी
- ★ शाक्य, लिच्छवि एवं यौधेय में से प्रारंभिक गणतंत्र में नहीं था
— यौधेय
- ★ विश्व का पहला गणतंत्र वैशाखी में स्थापित किया गया
— लिच्छवी द्वारा
- ★ सही सुमेलन है—
पार्श्वनाथ - जैन
बिंदुसार - मौर्य
स्कंदगुप्त - गुप्त
चेतक - लिच्छवी
- ★ 16 महाजनपदों की सूची जिन प्राचीन ग्रंथों में मिलती है, वे हैं
— अंगुत्तर निकाय एवं भगवती सूत्र में
- ★ महाभारत के अनुसार उत्तरी पांचाल की राजधानी स्थित थी
— अहिच्छत्र में
- ★ सोलह महाजनपदों के युग में मथुरा राजधानी थी — सूरसेन की
- ★ चम्पा राजधानी थी — अंग की
- ★ छठवीं शताब्दी ई.पू. में शुक्तिमती राजधानी थी — चेदि की
- ★ गोदावरी नदी के तट पर स्थित महाजनपद था — अस्सक
- ★ मगध की प्रारंभिक राजधानी थी — राजगृह (गिरिक्रज)
- ★ गिरिक्रज, राजगृह पाटलिपुत्र तथा कौशांबी में से वह, जो मगध साम्राज्य की राजधानी नहीं रहा — कौशांबी
- ★ प्राचीन श्रावस्ती का नगर विन्यास है — अर्द्धचंद्राकार
- ★ मगध का प्रारंभिक शासक जिसने राज्यारोहण के लिए अपने पिता की हत्या की एवं स्वयं इसी कारणवश अपने पुत्र द्वारा मारा गया
— अजातशत्रु
- ★ अजातशत्रु के वंश का नाम था — हर्यक

- ★ मालवा क्षेत्र पर मगध की सत्ता का विस्तार हुआ था
— शिशुनाग के शासन काल में
- ★ नंद वंश के पश्चात मगध पर शासन किया — मौर्य राजवंश ने
- ★ राजा नंद का उल्लेख करने वाला अभिलेखीय प्रमाण है
— खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख
- ★ मगध पर शासन करने वाले राजवंशों का कालक्रम है
— हर्यक वंश, नंद वंश, मौर्य वंश, शुंग वंश
- ★ मगध का सम्राट जो 'अपरोपरशुराम' के नाम से जाना जाता है
— महापद्मनंद
- ★ सही कथन हैं
— विश्व के सभी भागों में ईस्वी पूर्व छठवीं शताब्दी एक महान धार्मिक उत्थल-पुथल का काल था, वैदिक धर्म बहुत जटिल हो चुका था।
- ★ गौतम बुद्ध के समय का प्रसिद्ध वैद्य जीवक संबंधित था
— विविस्वर के दरबार से
- ★ कावपी नगर जिस नदी के तट पर स्थित है, वह है — यमुना
- ★ सही सुमेलन है—

उ.प्र. के प्राचीन जनपद	राजधानी
कुरु	- इन्द्रप्रस्थ
पांचाल	- अहिच्छत्र
कोशल	- साकेत
वत्स	- कौशांबी

यूनानी आक्रमण

- ★ सिकंदर के हमले के समय उत्तर भारत पर शासन था
— नंद का
- ★ मगध का राजा, जो सिकंदर महान के समकालीन था — घनानंद
- ★ कथन (A) : लगभग दो वर्ष के अभियान के पश्चात सिकंदर महान ने 325 ई. पू. में भारत छोड़ दिया।
कारण (R) : वह चंद्रगुप्त मौर्य से पराजित हुआ था।
— A सही है, परंतु R गलत है
- ★ युद्ध-भूमि में बड़ी संख्या में सैनिकों के मारे जाने अथवा आहत हो जाने के बाद जिस भारतीय गण अथवा राज्य की स्त्रियों ने सिकंदर के विरुद्ध शस्त्र धारण किया था, वह है
— मस्सग
- ★ भारत में सिकंदर की सफलता के कारण थे
— उस समय भारत में कोई केंद्रीय सत्ता नहीं थी, उसकी फौज बेहतर थी, उसे देशद्रोही शासकों से सहायता मिली
- ★ वह वीर भारतीय राजा, जिसे सिकंदर ने झेलम के तट पर पराजित किया था
— पुरु (पोरस)
- ★ नियाकस, आनेसिक्रिटस, डाइमेकस तथा अरिस्टोब्यूलस में से वह, जो सिकंदर के साथ भारत में नहीं आया था
— डाइमेकस

मौर्य साम्राज्य

- * प्रथम भारतीय साम्राज्य स्थापित किया गया था — चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा
- * गुप्त, मौर्य, वर्धन, कुषाण में से सबसे पुराना राजवंश है — मौर्य
- * जिसके ग्रंथ में चंद्रगुप्त मौर्य का विशिष्ट रूप से वर्णन हुआ है, वह है — विशाखदत्त
- * सैंड्रोकोट्स से चंद्रगुप्त मौर्य की पहचान की — विलियम जॉन्स ने
- * प्लिनी, जस्टिन, स्ट्रैबो तथा मेगास्थनीज में से वह जिसने 'सैंड्रोकोट्स' (चंद्रगुप्त मौर्य) और सिकंदर महान की भेंट का उल्लेख किया है — जस्टिन
- * कौटिल्य प्रधानमंत्री थे — चंद्रगुप्त मौर्य के
- * चाणक्य अपने बचपन में जाने जाते थे — विष्णुगुप्त के नाम से
- * कौटिल्य का अर्थशास्त्र है, एक — शासन के सिद्धांतों की पुस्तक
- * सप्तांग सिद्धांत के अनुसार राज्य के अंग हैं — राजा, आम्त्य, जनपद, दुर्ग, कोष, सेना एवं मित्र
- * कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में प्रकाश डाला गया है — राजनीतिक नीतियों पर
- * मैग्नावेले की 'प्रिंस' से तुलना की जा सकती है — कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' की
- * डाइमेक्स भारत आया था — बिंदुसार के शासनकाल में
- * पाटलिपुत्र में स्थित चंद्रगुप्त का महल मुख्यतः बना था — लकड़ी का
- * जिस प्राचीन नगर के अवशेष कुम्हार स्थल से प्राप्त हुए हैं, वह है — पाटलिपुत्र
- * बुलंदीबाग प्राचीन स्थान था — पाटलिपुत्र का
- * अशोक, चंद्रगुप्त, बिंदुसार तथा कुषाण में से वह मौर्य राजा जिसने दक्कन की विजय प्राप्त की थी — चंद्रगुप्त
- * मातवा, गुजरात एवं महाराष्ट्र पहली बार जीता — चंद्रगुप्त मौर्य ने
- * वह अभिलेख, जिससे यह प्रमाणित होता है कि चंद्रगुप्त का प्रभाव पश्चिम भारत पर था — रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख
- * गुजरात चंद्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य में सम्मिलित था, यह प्रमाणित होता है — रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख से
- * सेल्यूकस, जिनको अलेक्जेंडर द्वारा सिंध एवं अफगानिस्तान का प्रशासक नियुक्त किया गया था, को हराया था — चंद्रगुप्त ने
- * चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस को पराजित किया था — 305 ई.पू. में

* दिया गया मानचित्र संबंधित है—



- अशोक से, उसके शासनकाल के अंतिम समय से
 - * सहिष्णुता, उदारता और करुणा के त्रिविध आधार पर राजधर्म की स्थापना की — अशोक ने
 - * अफगानिस्तान, बिहार, श्रीलंका तथा कर्तिंग में से वह क्षेत्र, जो अशोक के साम्राज्य में सम्मिलित नहीं था — श्रीलंका
 - * अशोक के तृतीय मुख्य शिलालेख, द्वितीय मुख्य शिलालेख, नवां मुख्य शिलालेख तथा प्रथम स्तंभ अभिलेख में से वह, जिसमें दक्षिण भारतीय राज्यों का उल्लेख हुआ है — द्वितीय मुख्य शिलालेख
 - * भारत के प्रथम अस्पताल एवं औषधि-बाग का निर्माण करवाया था — अशोक ने
 - * "अशोक ने बौद्ध होते हुए भी, हिंदू धर्म में आस्था नहीं छोड़ी" इसका प्रमाण है — 'देयनामप्रिय' की उपाधि
 - * अशोक के शासनकाल में बौद्ध सभा आमंत्रित की गई थी — पाटलिपुत्र में
 - * मौर्य शासक जो बौद्ध धर्म के अनुयायी थे — अशोक एवं दशरथ
 - * रज्जुक थे — मौर्य शासन में अधिकारी
 - * सार्थवाह कहते थे — व्यापारियों के कफिले को
 - * अग्रहारिक, युक्त, प्रादेशिक तथा राजुक में से वह अधिकारी जो मौर्य प्रशासन का भाग नहीं था — अग्रहारिक
 - * सारनाथ स्तंभ का निर्माण किया था — अशोक ने
 - * सर्वश्रेष्ठ स्तूप मानते हैं — सांची को
 - * सांची का स्तूप बनवाया था — अशोक ने
 - * सुमेरित हैं—
- | | |
|-----------|------------------|
| स्थान | स्मारक/भग्नावशेष |
| कौशांबी | — घोषिताराम मठ |
| कुशीनगर | — रानाभर स्तूप |
| सारनाथ | — धमेख स्तूप |
| श्रावस्ती | — सहेत-महेत |

सम-साक्षिक घटना काल

- * सम्राट अशोक की तीर्थ यात्रा का सही क्रम है
— गया, कुशीनगर, लुंबिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ एवं श्रावस्ती
- * अशोक के शिलालेखों (Inscriptions) में प्रयुक्त भाषा है
— प्राकृत भाषा में
- * कातसी, गिरनार, शाहबाजगढ़ी तथा मेरठ में से वह अशोक कालीन अभिलेख जो 'खरोष्ठी' लिपि में है
— शाहबाजगढ़ी
- * पत्थर पर प्राचीनतम शिलालेख थे
— प्राकृत भाषा में
- * अशोक के शिलालेखों को सर्वप्रथम पढ़ा था
— जेम्स प्रिंसेप ने
- * वह स्थान, जहां प्राकृत अशोक ब्राह्मी लिपि का पता चला है — अनुराधपुर
- * प्राचीन भारत में ब्राह्मी, नंदनागरी, शारदा तथा खरोष्ठी में से, वह एक लिपि जो दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाती थी
— खरोष्ठी
- * अशोक का अपने शिलालेखों में सामान्यतः जिस नाम से उल्लेख हुआ है, वह है
— प्रियदर्शी
- * अशोक के प्रस्तर स्तंभों के संदर्भ में सत्य कथन हैं
— इन पर बढ़िया पॉलिश है, ये अखंड हैं, स्तंभों का शैफ्ट गुंडाकार है
- * मारकी, गुर्जरा, नेट्टर एवं उडेगोलन में से वह एक अभिलेख जिसमें अशोक के व्यक्तिगत नाम का उल्लेख मिलता है
— मारकी
- * अशोक का रुमिनदेई स्तंभ संबंधित है
— बुद्ध के जन्म से
- * गुजरा लघु शिलालेख, जिसमें अशोक का नामोल्लेख किया गया है, स्थित है
— मध्य प्रदेश के दतिया जिले में
- * केवल वह स्तंभ जिसमें अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट बताया है
— भाबू स्तंभ
- * कातसी प्रसिद्ध है
— अशोक के शिलालेख के कारण
- * उत्तराखंड में, सम्राट अशोक के शिलालेखों की एक प्रति मिली थी
— कालसी में
- * कलिंग युद्ध की विजय तथा क्षतियों का वर्णन अशोक के जिस शिलालेख (Rock Edict) में है, वह है
— शिलालेख XIII
- * अशोक का पूर्णरूपेण धार्मिक सहिष्णुता के प्रति समर्पित अभिलेख है
— शिलालेख XII
- * अशोक के जो प्रमुख शिलालेख (Rock Edicts) संगम राज्य के विषय में हमें बताते हैं, उनमें सम्मिलित हैं
— II और XIII शिलालेख
- * चोल, पाण्ड्य, सतिषपुत्त तथा सातवाहन में से वह दक्षिणी राज्य, जिसका उल्लेख अशोक के अभिलेखों में नहीं है
— सातवाहन
- * अशोक का वह अभिलेख जिसमें पारंपरिक अवसरों पर पशु बलि पर रोक लगाई गई है, ऐसा लगता है कि यह पाबंदी पशुओं के वध पर थी
— शिला अभिलेख I
- * टालेमी फिलाडेल्फस (तुरमय) जिसके साथ अशोक के राजनव संबंध थे, शासक था
— मित्र का

- * चोल, गुप्त, मौर्य तथा पल्लव में से वह राजवंश जिसके शासकों के सुदूर देशों जैसे सीरिया एवं मिस्र के साथ राजकीय संबंध थे — मौर्य
- * प्राचीन भारतीय अभिलेखों में से वह एक खाद्यान्न जिसे देश में संकटकाल में उपयोग हेतु सुरक्षित रखने के बारे में प्राचीनतम शाही आदेश है
— सेहगौरा ताम्रपत्र
- * कथन (A) : अशोक ने कलिंग को मौर्य साम्राज्य में जोड़ लिया था।
कारण (R) : कलिंग दक्षिण भारत को जाने वाटे स्थलीय एवं समुद्री मार्गों को नियंत्रित करता था।
— (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है
- * कथन (A) : मौर्यकालीन शासकों ने धार्मिक आधार पर भू-अनुदान नहीं दिया था।
कारण (R) : भू-अनुदान के विरुद्ध कृषकों ने विद्रोह किया।
— (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
- * मौर्यकाल में टैक्स को छुपाने (चोरी) के लिए दिया जाता था
— मृत्युदंड
- * प्रसिद्ध यूनानी राजदूत मेगस्थनीज भारत में आए थे
— चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में
- * मेगस्थनीज ने अपने ग्रंथ इंडिका में भारतीय समाज को विभाजित किया
— सात श्रेणियों में
- * अर्थशास्त्र, मुद्राराक्षस, मेगस्थनीज की इंडिका तथा वायुपुराण में से वह स्रोत जिसमें उल्लिखित है कि प्राचीन भारत में दासता नहीं थी
— मेगस्थनीज की इंडिका
- * वह स्रोत जिसमें पाटलिपुत्र के प्रशासन का वर्णन उपलब्ध है
— इंडिका
- * वह स्रोत जो मौर्यों के नगर प्रशासन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है
— मेगस्थनीज की इंडिका
- * मेगस्थनीज की पुस्तक का नाम है
— इंडिका
- * मौर्य नरेशों ने विकास किया था
— संस्कृति कला व साहित्य, प्रांतीय विभाजन, हिंदुकुश तक साम्राज्य
- * 'भाग' एवं 'बलि' थे
— राजस्व के स्रोत
- * मौर्य काल में भूमि कर, जो कि राज्य की आय का मुख्य स्रोत था एकत्रित किया जाता था
— सीतबिहारी द्वारा
- * मौर्यकाल में 'सीता' से तात्पर्य है
— राजकीय भूमि से प्राप्त आय
- * मौर्य मंत्रिपरिषद में राजस्व इकट्ठा करने से संबंधित था
— समाहर्ता
- * मौर्ययुगीन अधिकारी जो तौल-माप का प्रभारी था
— पौतबिहारी
- * 'पंचोदकसन्निरेधे' मौर्य प्रशासन द्वारा लिया जाने वाला जुर्माना था
— सड़क पर कीचड़ फैलाने पर
- * मौर्य काल में शिक्षा का सर्वाधिक प्रसिद्ध केंद्र था
— तक्षशिला

सम-सामयिक घटना

- * कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' के अनुसार मौर्यकालीन न्याय व्यवस्था में ये न्यायालय अस्तित्व में थे — धर्मस्थाय एवं कंटकशोधन
- * वर्तमान नगरपालिका प्रशासन का यह कार्य मौर्य काल से जारी है — जन्म एवं मृत्यु का पंजीकरण
- * भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में इतिवृत्तों, राजवंशीय इतिहासों तथा वीरगाथाओं को कंठस्थ करना व्यवसाय था — मागध एवं सूत वर्गों का
- * गांवों के शासन को स्वायत्तताशी पंचायतों के माध्यम से संचालित करने की व्यवस्था का सूत्रपात किया मौर्यों ने
- * प्राचीन भारत का ग्रंथ जिसमें पति द्वारा परित्यक्त पत्नी के लिए विवाह विच्छेद की अनुमति दी गई है — अर्थशास्त्र
- * जातक, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य एवं अर्थशास्त्र में से पुनर्विवाह वर्जित (Prohibits) है — मनुस्मृति में
- * विदेशियों को भारतीय समाज में मनु द्वारा दिया गया सामाजिक स्तर था — क्षत्र्य क्षत्रियों का (Fallen Kshatriyas)
- * प्राचीन भारत के यात्रियों का सही क्रम है — मेगस्थनीज, पत्रह्वान, ह्वेनसांग एवं इत्सिंग

* सही सुमेलित है—

सूची-I

चंद्रगुप्त
बिंदुसार
अशोक
चाणक्य

सूची-II

— सैंड्रोकोटस
— अमित्रघात
— पियदसि
— विष्णुगुप्त

- * अंतिम मौर्य सम्राट था — बृहद्रथ
- * सही कथन हैं — अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या उसके प्रधान सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी, अंतिम शुंग राजा देवभूति की हत्या उसके ब्राह्मण मंत्री वासुदेव कण्व ने की और उसने राजसिंहासन हथिया लिया, आंध्र ने कण्व राजवंश के अंतिम शासक को पद वंचित किया था।
- * ईस्वी सन के पूर्व की कुछ शताब्दियों में गिरनार क्षेत्र में जल संसाधन व्यवस्था की ओर ध्यान दिया — चंद्रगुप्त मौर्य एवं अशोक ने
- * जल की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, जिस प्रथम शासक ने गिरनार क्षेत्र में एक झील का निर्माण करवाया, वह था — चंद्रगुप्त मौर्य
- * सुमेलित हैं—
लोथल - एनसिएंट डाक्यूअर्ड
सारनाथ - फर्स्ट सरमन ऑफ बुद्ध
सारनाथ - लायन कैपिटल ऑफ अशोक
नालंदा - ग्रेट सीट ऑफ बुद्धिस्ट लर्निंग

मौर्योत्तर काल

- * स्ट्रैटो II, स्ट्रैटो I, डेमेट्रियस तथा मेनांडर में से वह हिंद-यवन शासक जिसने सीसे के सिक्के जारी किए थे — स्ट्रैटो II
- * बिबिसार, गौतम बुद्ध, भित्तिद तथा प्रसेनजीत में से वह एक जो अन्य तीनों के समसामयिक नहीं था — भित्तिद
- * 'काव्य' शैली का प्राचीनतम नमूना मिलता है — काटियावाड़ के रुद्रदामन के अभिलेख में
- * रुद्रदामन प्रथम की विभिन्न उपलब्धियां वर्णित हैं — जूनागढ़ के अभिलेख में
- * बिना बेगार के सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया — रुद्रदामन प्रथम ने
- * उत्तरी तथा उत्तरी-पश्चिमी भारत में सर्वाधिक संख्या में तांबे के सिक्कों को जारी किया था — कुषाणों ने
- * प्राचीन भारत में नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाए — कुषाण ने
- * विम कडफिसेस, कनिष्क, नहपाण एवं बुध गुप्त में से जिसके सिक्कों पर बुद्ध का अंकन हुआ है, वह है — कनिष्क
- * कुजुल कडफिसेस, विम कडफिसेस, कनिष्क प्रथम तथा हुविष्क में से वह शासक जिसको सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी करने का श्रेय दिया जाता है — विम कडफिसेस
- * विम कडफिसेस, कुजुल कडफिसेस, कनिष्क तथा हर्मवीज में से वह, जिसने भारत में स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन नियमित उपयोग के लिए किया था — विम कडफिसेस ने
- * यौधेय सिक्कों पर अंकन मिलता है — कार्तिकेय का
- * कनिष्क के सारनाथ बौद्ध प्रतिमा अभिलेख की तिथि है — 81 ई.सन्
- * कुषाण शासक कनिष्क का राज्याभिषेक हुआ — 78 ई. में
- * शक संवत् प्रारंभ किया गया — 78 ई. में
- * विक्रम एवं शक संवत्तों में अंतर (वर्षों में) है — 135 वर्ष
- * विक्रम संवत् प्रारंभ हुआ — 57 ई. पू. में
- * कनिष्क के समकालीन थे — अश्वघोष एवं वसुमित्र
- * अश्वघोष, चरक, नागार्जुन तथा पतंजलि में से वह, जो कनिष्क के दरबार से संबद्ध नहीं था — पतंजलि
- * अश्वघोष, पार्श्व, वसुमित्र तथा विशाखदत्त में से वह, जो कनिष्क प्रथम के दरबार में नहीं गया था — विशाखदत्त

सम-साक्षिक घटना ब्रह्म

- ★ श्रावस्ती, कौशांबी, पाटलिपुत्र तथा चम्पा नगरों में से कनिष्क के रबतक अभिलेख में उल्लेख नहीं है — श्रावस्ती का
- ★ तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी — चरक तथा जीवक ने
- ★ शुंग वंश के बाद भारत पर राज किया — कण्व वंश ने
- ★ पुष्यमित्र शुंग, खारवेल, गौतमीपुत्र शातकर्णी, वासुदेव एवं समुद्रगुप्त में से वह शासक जो वर्ण-व्यवस्था का रक्षक कहा जाता है — गौतमीपुत्र शातकर्णी
- ★ मौर्यों के बाद दक्षिण भारत में सबसे प्रभावशाली राज्य था — सातवाहन
- ★ सिमुक संस्थापक था — सातवाहन वंश का
- ★ चीनी जनरल जिसने कनिष्क को हराया था — पान चाऊ
- ★ गुप्त वंश, मौर्य वंश तथा कुषाण वंश में से वह वंश जिसके साम्राज्य की सीमाएं भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर तक फैली थीं — कुषाण वंश
- ★ बात विवाह की प्रथा आरंभ हुई — कुषाणकाल में
- ★ कला की गांधार शैली फली-फूली — कुषाणों के समय में
- ★ सुमेलित हैं—

राजवंश	सिक्कों की धातुएं
कुषाण	- स्वर्ण एवं ताम्र
गुप्त	- स्वर्ण एवं रजत
सातवाहन	- सीसा एवं पीतल
कलचुरि	- स्वर्ण, रजत एवं ताम्र
- ★ अफगानिस्तान का बामियान प्रसिद्ध था — बुद्ध प्रतिमा के लिए
- ★ जो कला शैली भारतीय और यूनानी (ग्रीक) आकृति का सम्मिश्रण है, उसे कहते हैं — गांधार
- ★ वह मूर्ति कला जिसमें सदैव हरित स्तरित चट्टान (शिस्ट) का प्रयोग माध्यम के रूप में होता था — गांधार मूर्ति कला
- ★ प्राचीन काल के भारत पर आक्रमणों के संबंध में सही कालानुक्रम है — यूनानी-शक-कुषाण
- ★ पहला ईरानी शासक जिसने भारत के कुछ भाग को अपने अधीन किया था — डेरियस प्रथम
- ★ चातुर्ग, पल्लव, राष्ट्रकूट तथा सातवाहन राजवंशों में सबसे पुराना राजवंश था — सातवाहन
- ★ आंध्र सातवाहन राजाओं की सबसे लंबी सूची मिलती है — मत्स्य पुराण में
- ★ सातवाहनों की राजधानी अवस्थित थी — अमरावती एवं प्रतिष्ठान में

- ★ 'एका ब्राह्मण' प्रयुक्त हुआ है — गौतमीपुत्र शातकर्णी के लिए
- ★ निम्न कथनों पर विचार कीजिए—
 कथन (A) : कुषाण फारस की खाड़ी और लाल सागर से होकर व्यापार करते थे।
 कारण (R) : उनकी सुसंगठित नौसेना उच्च कोटि की थी।
 — A सही है, परंतु R गलत है।
- ★ राजा खारवेल का नाम जुड़ा है — हाथीगुम्फा लेख के साथ
- ★ अशोक, हर्ष, पुलकेशिन द्वितीय एवं खारवेल में से वह, जो जैन धर्म का संरक्षक था — खारवेल
- ★ कर्लिन नरेश खारवेल संबंधित थे — चेदि वंश से
- ★ दशरथ, बृहद्रथ, खारवेल तथा हुविष्क राजाओं में से वह जिसका जैन धर्म के प्रति भारी झुकाव था — खारवेल
- ★ पूर्वी रोमन शासक जस्टिनियन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान था — विधि में

गुप्त एवं गुप्तोत्तर युग

- ★ गुप्तवंश ने शासन किया — 319-500 ई. अर्थात् के मध्य
- ★ चार अश्वमेधों का संपादन किया था — प्रवरसेन प्रथम ने
- ★ 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है — समुद्रगुप्त को
- ★ गुप्त राजा देवगुप्त का एक अन्य नाम था — चंद्रगुप्त द्वितीय
- ★ प्रथम गुप्त शासक जिसने 'परम भगवत' की उपाधि धारण की — चंद्रगुप्त द्वितीय
- ★ इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख संबद्ध है — समुद्रगुप्त से
- ★ प्रयाग प्रशस्ति जानकारी देती है — कुमारगुप्त के सैन्य अभियान के बारे में
- ★ समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति वाले स्तंभ पर लेख मिलता है — जहांगीर का
- ★ 'पृथिव्या प्रथम वीर' उपाधि थी — समुद्रगुप्त की
- ★ हूणों के आक्रमण से अत्यंत विचलित हुआ — गुप्त राजवंश
- ★ हूणों ने भारत पर आक्रमण किया था — स्कंदगुप्त के शासनकाल में
- ★ गुप्त शासक जिसने हूणों पर विजय प्राप्त की — स्कंदगुप्त
- ★ वह अभिलेख जिससे ज्ञात होता है कि स्कंदगुप्त ने हूणों को पराजित किया था — गितरी स्तंभ-लेख
- ★ गुप्त साम्राज्य के पतन के विभिन्न कारण थे, जो हैं — हूण आक्रमण, प्रशासन का सामंतीय ढांचा, उत्तरवर्ती गुप्तों का बौद्ध धर्म स्वीकार करना, अयोग्य उत्तराधिकारी
- ★ 'शक-विजेता' के रूप में जाना जाता है — चंद्रगुप्त द्वितीय को

सम-सांस्कृतिक पटना का

- * चंद्रगुप्त द्वितीय ने पराजित किया था — रुद्र सिंह तृतीय को
- * रजत सिक्के जारी करने वाला प्रथम गुप्त शासक — चंद्रगुप्त द्वितीय
- * गुप्तकाल में उत्तर भारतीय व्यापार जिस एक पत्तन से संचालित होता था, वह है — तम्रलिप्ति
- * भारत ने दक्षिण-पूर्वी एशिया के साथ अपने आरंभिक सांस्कृतिक संपर्क तथा व्यापारिक संबंध बंगाल की खाड़ी के पार बना रखे थे, क्योंकि — बंगाल की खाड़ी में चलने वाली मानसूनी हवाओं ने समुद्री यात्राओं को सुगम बना दिया था
- * प्राचीन भारत में देश की अर्थव्यवस्था में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली 'श्रेणी' संगठन के संदर्भ में सत्य कथन है — 'श्रेणी' ही वेतन, काम करने के नियमों, मानकों और कीमतों को सुनिश्चित करती थी। 'श्रेणी' का अपने सदस्यों पर न्यायिक अधिकार होता था।
- * गुप्तकाल में गुजरात, बंगाल, दक्कन एवं तमिल राष्ट्र में स्थित केंद्र संबंधित थे — वस्त्र उत्पादन से
- * गुप्तकाल में अपनी आबुर्विज्ञान विषयक रचना के लिए जाना जाता है — सुश्रुत
- * धनवंतरि, भास्कराचार्य, चरक तथा सुश्रुत में से प्राचीन भारत के आबुर्वेद शास्त्र से संबंध नहीं है — भास्कराचार्य का
- * प्राचीन कालीन भारत में हुई वैज्ञानिक प्रगति के संदर्भ में सत्य कथन है — प्रथम शती ईस्वी में विभिन्न प्रकार के विशिष्ट शल्य औजारों का उपयोग आम था। पांचवीं शती ईस्वी में कोण के ज्या का सिद्धांत ज्ञात था। सातवीं शती ईस्वी में चक्रीय चतुर्भुज का सिद्धांत ज्ञात था।
- * चंद्रगुप्त के नौ रत्नों में से फलित-ज्योतिष से संबंधित था — क्षपणक
- * कालिदास जिसके शासनकाल में थे, वह शासक है — चंद्रगुप्त II
- * गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्रा है — दीनार
- * गुप्तकालीन रजत मुद्राओं को नाम दिया गया था — रुपक
- * वह गुप्त शासक जिसने सर्वप्रथम सिक्के जारी किए — चंद्रगुप्त प्रथम
- * गुप्तकाल में लिखित संस्कृत नाटकों में स्त्री और शूद्र बोलते थे — प्राकृत
- * सती प्रथा का प्रथम अभिलेखिक साक्ष्य प्राप्त हुआ है — एरण से
- * गुप्त संवत की स्थापना की — चंद्रगुप्त I ने
- * सुमेलित हैं—

सम्राट	विरुद्ध
अशोक	— प्रियदर्शन
समुद्रगुप्त	— परक्रमांक
चंद्रगुप्त-II	— विक्रमादित्य
स्कंदगुप्त	— क्रमादित्य

- * नगरों का क्रमिक पतन एक महत्वपूर्ण विशेषता थी — गुप्तकाल की
- * मंदिरों एवं ब्राह्मणों को सबसे अधिक ग्राम अनुदान में दिया था — गुप्त वंश ने
- * प्राचीन भारत में वह वंश, जिसका शासनकाल 'स्वर्ण युग' कहा जाता है — गुप्त
- * गुप्त युग में भूमि राजस्व की दर थी — उपज का छठां भाग
- * हिंदू विधि द्वारा मान्य कर था — उपज का छठां भाग
- * गुप्त साम्राज्य द्वारा कर-रहित कृषि भूमि प्रदान की जाती थी — ब्राह्मणों को
- * प्राचीन भारत में सिंचाई कर को कहते थे — विदकभागम
- * तीसरी शताब्दी में वारंगत प्रसिद्ध था — लोहे के यंत्रों/उपकरणों हेतु
- * तोरमाण था — हूण जातीय दल का
- * हूण शासक मिहिरकुल को पराजित किया था — बातदित्य एवं यशोधर्मन ने
- * विशाखदत्त के प्राचीन भारतीय नाटक मुद्राराक्षस की विषय वस्तु है — चंद्रगुप्त मौर्य के समय में राजदरबार की दुरभिसंधियों के बारे में
- * सत्य कथन है — गुप्त सम्राट स्वयं के लिए दैवीय अधिकारों का दावा करते थे। उनका प्रशासन विकेंद्रीकृत था। उन्होंने भूमिदान की परंपरा को विस्तारित किया।
- * शतरंज का खेल उद्भूत (originate) हुआ था — भारत में
- * शूद्रक द्वारा लिखी हुई प्राचीन भारतीय पुस्तक 'मृच्छकटिकम्' का विषय था — एक धनी व्यापारी और एक गणिका की पुत्री की प्रेम-गाथा
- * प्राचीन सांख्य दर्शन में महत्वपूर्ण योगदान है — कपिल का
- * भारत में दार्शनिक विचार के इतिहास के संबंध में, सांख्य संप्रदाय से संबंधित सत्य कथन है — सांख्य की मान्यता है कि आत्म-ज्ञान ही मोक्ष की ओर ले जाता है, न कि कोई बाह्य प्रभाव अथवा कारक।
- * योग दर्शन के प्रतिपादक हैं — पतंजलि
- * अनुस्मृति, प्रत्याहार, ध्यान तथा धारणा में से वह, जो 'आष्टांग योग' का अंश नहीं है — अनुस्मृति
- * महाभाष्य के लेखक 'पतंजलि' समसामयिक थे — पुष्यमित्र शुंग के
- * नव्य-न्याय संप्रदाय (स्कूल) के संस्थापक थे — गंगेश
- * 'जब तक जीवित रहो, सुख से जीवित रहो, चाहे इसके लिए ऋण ही लेना पड़े, क्योंकि शरीर के भस्मीभूत हो जाने पर पुनरागमन नहीं हो सकता।' पुनर्जन्म का निषेध करने वाली यह उक्ति है — चार्वाकों की
- * वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक थे — कणाद
- * न्याय दर्शन के प्रवर्तक थे — गौतम

अतिरिक्त

15

सम-सामयिक घटना काल

- * मीमांसा के प्रणेता थे — जैमिनी
- * कर्म का सिद्धांत संबंधित है — मीमांसा से
- * सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा, न्याय तथा योग में से वह दर्शन जिसका मत है कि वेद शाश्वत सत्य हैं — मीमांसा
- * मीमांसा और वेदांत, न्याय और वैशेषिक, लोकायत और कापालिक तथा सांख्य और योग युगों में से वह एक जो भारतीय षड्दर्शन का भाग नहीं है — लोकायत और कापालिक
- * अद्वैत दर्शन के संस्थापक हैं — शंकराचार्य
- * ज्ञान, कर्म, भक्ति तथा योग में से अद्वैत वेदांत के अनुसार, मुक्ति प्राप्त की जा सकती है — ज्ञान द्वारा
- * शंकराचार्य, अभिनव गुप्त, रामानुज तथा माधव में से 'वेदांत दर्शन' के साथ संबंध नहीं है — अभिनव गुप्त का
- * सुगेलित हैं—

संवत्सर	गणना अवधि
विक्रम संवत्सर	— 58 ई.पू.
शक संवत्सर	— 78 ईस्वी
गुप्त संवत्सर	— 320 ईस्वी
कति संवत्सर	— 3102 ई.पू.

- * सत्य कथन है — विक्रम संवत् 58 ई.पू. से आरंभ हुआ
शक संवत् सन 78 ई.से आरंभ हुआ
गुप्तकाल सन 319 से आरंभ हुआ
- भारत में मुसलमान शासन का युग सन् 1192 से शुरू हुआ
- * पुलकेशिन-II का बादामी शिलालेख शक वर्ष 465 का दिनांकित है। यदि इसे विक्रम संवत् में दिनांकित करना हो तो वर्ष होगा — 601 अथवा 600
- * एक चातुर्व्य अंगितेख के तिथि अंकन में शक संवत् का वर्ष 556 दिया हुआ है। इसका तुल्य वर्ष है — 634 ई.
- * पुराणों के अनुसार, चंद्रवंशीय शासकों का मूल स्थान था—प्रतिष्ठानपुर
- * मौखरि शासकों की राजधानी थी — कन्नौज
- * हरिषेण, कल्हण एवं कालिदास में से वह जिसकी पुस्तकों में हर्ष के समय की सूचनाएं निहित हैं — कल्हण
- * 'हर्षचरित' नामक पुस्तक लिखी — बाणभट्ट ने
- * हर्ष के साम्राज्य की राजधानी थी — कन्नौज
- * सम्राट हर्ष ने अपनी राजधानी थानेश्वर से स्थानांतरित की थी — कन्नौज में

- * सम्राट हर्षवर्धन ने दो महान धार्मिक सम्मेलनों का आयोजन किया था — कन्नौज तथा प्रयाग में
- * उत्तर प्रदेश में स्थित वह स्थल जहां हर्षवर्धन ने बौद्ध महासम्मेलन का आयोजन किया था — प्रयाग
- * नर्मदा नदी पर सम्राट हर्ष के दक्षिणवर्ती अभ्रगमन को रोका — पुलकेशिन II ने
- * हर्षवर्धन को पराजित किया था — पुलकेशिन द्वितीय ने
- * कवि बाण, निवासी था — प्रीथिकूटा (औरंगाबाद) का
- * ह्वेनसांग भारत आया था — सम्राट हर्ष के शासनकाल में
- * भारत की यात्रा करने वाले चीनी यात्री युआन च्यांग (ह्वेनसांग) ने तत्कालीन भारत की सामान्य दशाओं और संस्कृति का वर्णन किया है। इस संदर्भ में, सही कथन है — जहां तक अपराधों के लिए दंड का प्रश्न है, अग्नि, जल व विष द्वारा सत्यपरीक्षा किया जाना ही किसी भी व्यक्ति की निर्दोषता अथवा दोष के निर्णय के साधन थे। व्यापारियों को नौघाटों और नौकों पर शुल्क देना पड़ता था।
- * ह्वेनसांग की भारत यात्रा के समय सूती कपड़ों के उत्पादन के लिए सबसे प्रसिद्ध नगर था — मथुरा
- * 'कौशेय' शब्द का प्रयोग किया गया है — रेशम के लिए
- * चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अध्ययन किया था — नालंदा विश्वविद्यालय में
- * आज भी भारत में ह्वेनसांग को बाद करने का मुख्य कारण है — सी-यू-की की रचना
- * चीनी यात्री जिसने भीनमात की यात्रा की थी — ह्वेनसांग
- * चीनी यात्री इत्सिंग ने बिहार का भ्रमण किया, लगभग — 671 अथवा 672 ई. में
- * चीनी लेखक भारत का उल्लेख करते हैं — यिन-तु नाम से
- * नालंदा विश्वविद्यालय के विनाश का कारण था — मुस्लिम आक्रमण
- * भारत में सबसे प्राचीन विहार है — नालंदा
- * नालंदा स्थित है — बिहार में
- * गुप्तोत्तर युग में प्रमुख व्यापारिक केंद्र था — कन्नौज
- * कथन (A) : सामंतवाद का विकास गुप्तोत्तर काल की कृषक-संरचना की प्रमुख विशेषता थी।
कारण (R) : इस काल में भू-स्वामी मध्यस्थ वर्ग एवं आश्रित कृषक वर्ग अस्तित्व में आया।
— (A) तथा (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

सम-सामयिक घटना का

- * भारतीय इतिहास के संदर्भ में, सामंती व्यवस्था के अनिवार्य तत्व हैं
- भूमि के नियंत्रण तथा स्वामित्व पर आधारित प्रशासनिक संरचना का उदय, सामंती तथा उसके अधिपति के बीच स्वामी-दास संबंध का बनना
- * सत्य कथन है
 - चीनी तीर्थयात्री फाह्यान चंद्रगुप्त द्वितीय का समकालीन था, चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग, हर्ष से मिला और उसे बौद्ध धर्म का उपासक बताया
- * आठवीं शताब्दी के संत शंकराचार्य के बारे में सही कथन है—
 - उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चार धाम स्थापित किए। उन्होंने वेदांत का प्रसार किया। उन्होंने बौद्ध तथा जैन धर्मों के विस्तार पर रोक लगाई।
- * आदिशंकर जो बाद में शंकराचार्य बने, उनका जन्म हुआ था
 - केरल में
- * आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ स्थित हैं
 - जोशीमठ, द्वारका, पुरी, शृंगेरी में
- * सुमेरित हैं—

रविकीर्ति	—	पुलकेशिन II
भवभूति	—	कन्नौज के यशोवर्मन
हरिषेण	—	समुद्रगुप्त
दंडी	—	नरसिंह वर्मन
- * सुमेरित हैं—

दरबारी कवि	राजा
अमीर खुसरो	— अलाउद्दीन खिलजी
कालिदास	— चंद्रगुप्त II
हरिषेण	— समुद्रगुप्त
बाणभट्ट	— हर्षवर्धन
- * सुमेरित हैं—

भोज	-	धार
दुर्गावती	-	गोंडवाना
समुद्रगुप्त (प्रांतीय शासक)	-	विदिशा
अशोक (प्रांतीय शासक)	-	उज्जैन

प्राचीन भारत में स्थापत्य कला

- * खजुराहो का कंदरिया महादेव मंदिर बनवाया — चंदेल ने
- * खजुराहो के मंदिर संबंधित हैं — हिंदू धर्म और जैन धर्म से
- * खजुराहो स्थित मंदिरों का निर्माण करवाया था
 - चंदेलवंश के राजाओं ने

- * खजुराहो का मातंगेश्वर मंदिर समर्पित है — शिव को
- * कंदरिया महादेव, चौसठ योगिनी, दशावतार तथा चित्रगुप्त में से वह मंदिर जो खजुराहो में नहीं है — दशावतार
- * खजुराहो के मंदिर, भीमबेटका की गुफाएं, सांची के स्तूप तथा मांडू का महल में से वह जो विश्व धरोहर स्थल (वर्ल्ड हेरिटेज साइट) नहीं है — मांडू का महल
- * भितरगांव मंदिर, खालियर का तेली मंदिर, कंदरिया महादेव मंदिर तथा ओसिया मंदिर में से वह, जिसका शिखर द्रविड़ शैली में बना हुआ है — खालियर का तेली मंदिर
- * एक सौ से अधिक बौद्ध गुफाएं हैं — कन्हेरी केंद्र में
- * आबू का जैन मंदिर बना है — संगमरमर से
- * भावनगर, मासंट आबू, नासिक तथा उज्जैन नगरों में से वह जिसके निकट पाल्तिपाणा मंदिर अवस्थित है — भावनगर
- * एलीफेंटा की गुफाएं मुख्यतः इस धर्म के मतावलंबियों के उपयोग के लिए काटकर बनाई गई थी — शैव धर्म एवं बौद्ध
- * एलीफेंटा के प्रसिद्ध शैल को काटकर बनाए गए मंदिरों का श्रेय दिया जाता है — राष्ट्रकूटों को
- * अजंता, भाजा, एलिफेंटा तथा एलोरा में से 'त्रिमूर्ति' के लिए विख्यात है — एलिफेंटा
- * प्राचीन भारत में गुप्त काल से संबंधित गुफा चित्रांकन के केवल दो उदाहरण उपलब्ध हैं। इनमें से एक अजंता की गुफाओं में किया गया चित्रांकन है। गुप्त काल के चित्रांकन का दूसरा अवशिष्ट उपलब्ध है — बाघ गुफाओं में
- * एलोरा के गुह्यमंदिर संबंधित हैं — हिंदू, बौद्ध, जैन से
- * एलोरा में गुफाएं और शैल-कृत मंदिर हैं — हिंदुओं, बौद्धों और जैनों के
- * बौद्ध, हिंदू एवं जैन शैलकृत गुहाएं एक साथ विद्यमान हैं — एलोरा में
- * पश्चिमी भारत में प्राचीनतम शैलकृत गुफाएं हैं — नासिक, एलोरा और अजंता में
- * एलीफेंटा, नालंदा, अजंता तथा खजुराहो में से बौद्ध गुफा मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है — अजंता
- * एलोरा गुफाओं का निर्माण कराया था — राष्ट्रकूटों ने
- * शैलकृत स्थापत्य का आश्चर्य माना जाता है — कैलाश मंदिर, एलोरा को
- * एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण किया था — राष्ट्रकूट वंश ने
- * एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया था — कृष्णा I ने
- * राष्ट्रकूटों का संरक्षण प्राप्त था — जैन धर्म को

संस्कृत-सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तर

- ★ अजंता एवं एलोरा की गुफाएं स्थित हैं — औरंगबाद (महाराष्ट्र) में
- ★ सुमेलित हैं—

गुप्त मंदिर	स्थान
ईट निर्मित मंदिर	— भीतरगांव
दशवतार मंदिर	— देवगढ़
शिव मंदिर	— भूमरा
विष्णु मंदिर	— एरण

- ★ भारतीय शिल्पावस्तु के इतिहास के संदर्भ में सत्य कथन है — भीमबेटका की गुफाएं भारत की प्राचीनतम अवशिष्ट शैलकृत गुफाएं हैं। बराबर की शैलकृत गुफाएं सम्राट अशोक द्वारा मूलतः आजीविकों के लिए बनवाई गई थीं। एलोरा में, गुफाएं विभिन्न धर्मों के लिए बनवाई गई थीं।

- ★ अजंता की कला को प्रश्रय (सहायता) दिया — वाकाटक ने
- ★ अजंता की गुफाएं रामायण, महाभारत, जातक कथाएं तथा पंचतंत्र कहानियां में से संबंधित हैं — जातक कथाओं से
- ★ भित्ति चित्र कला के लिए भी जाना जाता है — अजंता की गुफा एवं लेपाक्षी मंदिर को
- ★ अजंता और महाबलीपुरम के रूप में ज्ञात दो ऐतिहासिक स्थानों में जो तथ्य समान हैं, वह है — दोनों में शिलाकृत स्मारक हैं।

- ★ सुमेलित हैं—

सूची-I	सूची-II
हम्पी	— कर्नाटक
नागार्जुनकोंडा	— आंध्र प्रदेश
शिथुपालगढ़	— ओडिशा
अरिकामेडु	— पुडुचेरी

- ★ कोणार्क का सूर्य मंदिर बनवाया था — नरसिंह देव वर्मन ने
- ★ 'काला (Black) पैगोडा' के नाम से भी जाना जाता है — कोणार्क के सूर्य मंदिर को
- ★ मोढेरा का सूर्य मंदिर स्थित है — गुजरात में
- ★ लिंगराज मंदिर अवस्थित है — भुवनेश्वर में
- ★ उड़ीसा में नष्ट होने से बचे मंदिरों में सर्वाधिक बड़ा और सबसे ऊंचा मंदिर है — लिंगराज मंदिर
- ★ जगन्नाथ मंदिर स्थित है — उड़ीसा में
- ★ भुवनेश्वर तथा पुरी के मंदिर निर्मित हैं — नागर शैली में
- ★ विष्णु को समर्पित अंकोरवाट मंदिर स्थित है — कंबोडिया में
- ★ बोरोबदूर स्तूप स्थित है — जावा में

- ★ अंकोरवाट मंदिर समूह का निर्माण 12वीं शताब्दी में करवाया था — सूर्यवर्मन II ने

- ★ द्रविड़ शैली के मंदिरों में 'गोपुरम' से तात्पर्य है — तैरण के ऊपर बने अलंकृत एवं बहुमंजिला भवन से
- ★ चट्टानों को काटकर महाबलीपुरम अथवा मामल्लपुरम का मंदिर बनवाया गया — पल्लव द्वारा
- ★ महाबलीपुरम का सप्तरथ मंदिर बनवाया गया था — नरसिंह वर्मन I द्वारा

- ★ महाबलीपुरम के रथ मंदिरों का निर्माण करवाया था — नरसिंह वर्मन I ने
- ★ द्रौपदी रथ, भीमरथ, अर्जुन रथ तथा धर्मराज रथ में से वह, रथ मंदिर जो सबसे छोटा है — द्रौपदी रथ

- ★ सुमेलित हैं—

स्थान	स्मारक
एलीफेंटा	— गुफा
श्रवणबेलगोला	— मूर्ति
खजुराहो	— मंदिर
सांची	— स्तूप

- ★ सुमेलन हैं—

ऐतिहासिक स्थल	राज्य
भीमबेटका	— मध्य प्रदेश
शोर टेम्पल	— तमिलनाडु
हम्पी	— कर्नाटक
मानस	— असम

- ★ सुमेलित हैं—

एलोरा की गुफाएं	— राष्ट्रकूट
मीनक्षी मंदिर	— पाण्ड्य
खजुराहो मंदिर	— चंदेल
महाबलीपुरम के मंदिर	— पल्लव

- ★ सुमेलित हैं—

सूची-I	सूची-II
बैजनाथ धाम	— शिव मंदिर
सारनाथ	— बुद्ध का शांति का प्रथम प्रवचन स्थल
दिलवाड़ा	— जैन मंदिर
बद्रीनाथ	— विष्णु मंदिर

सम-सांख्यिक पटना पत्र

* सुमेरित हैं—

सूर्य मंदिर	—	कोणार्क
तिंनराज मंदिर	—	भुवनेश्वर
हवामहल	—	जयपुर
गोमतेश्वर की प्रतिमा	—	कर्नाटक

* सुमेरित हैं—

सूची-I	सूची-II
नालंदा	— विश्वविद्यालय
सारनाथ	— अशोक स्तंभ
सांची	— स्तूप
कोणार्क	— सूर्य मंदिर

* प्राचीन नगर तक्षशिला स्थित था

— सिंधु तथा झेलम नदियों के बीच

* सोनगिरी, जहां 108 जैन मंदिर बने हुए हैं, स्थित है

— दतिया के सन्निकट

* सोनगिरी का ऐतिहासिक दिगंबर जैन तीर्थस्थल स्थित है

— मध्य प्रदेश में

* दिलवाड़ा जैन मंदिर है — माउंट आबू में अरावली पर्वत पर

* प्रसिद्ध विरुपाक्ष मंदिर अवस्थित है — हम्पी में

* नागर, द्रविड़ और बेसर हैं—भारतीय मंदिर वास्तु की तीन मुख्य शैलियां

* भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में 'पंचावतन' शब्द निर्दिष्ट करता है — मंदिर रचना-शैली

* प्रसिद्ध नैमिषारण्य स्थित है — सीतापुर में

* सुमेरित हैं—

विख्यात मूर्तिशिल्प	स्थल
बुद्ध के महापरिनिर्वाण की एक भव्य प्रतिमा जिसमें ऊपर की ओर अनेकों दैवी संगीतज्ञ तथा नीचे की ओर उनके दुखी अनुयायी दर्शाए गए हैं	अजंता
प्रस्तर पर उत्कीर्ण विष्णु के वराह अवतार की विशाल प्रतिमा जिसमें वह देवी पृथ्वी को गहरे विशुद्ध सागर से उबारते दर्शाए गए हैं	उदयगिरि गुफा
विशात गोलाशर्भों पर उत्कीर्ण "अर्जुन की तपस्या"/"गंगा-अमृतारण"	मामलपुरम

* भारत के कला और पुरातात्विक इतिहास के संदर्भ में, भुवनेश्वर स्थित तिंनराज मंदिर, घौली स्थित शैलकृत हाथी, महाबलीपुरम स्थित शैलकृत स्मारक तथा उदयगिरि स्थित वराह मूर्ति में से वह जिसका सबसे पहले निर्माण किया गया था — घौली स्थित शैलकृत हाथी

दक्षिण भारत (चोल, चालुक्य, पल्लव एवं संगम युग)

* नवीं शताब्दी ई. में चोल साम्राज्य की नींव डाली गई

— विजयालय द्वारा

* वह मंदिर परिसर जिसमें एक भारी-भरकम नदी की मूर्ति है, जिसे भारत की विशालतम नदी मूर्ति माना जाता है — वृहदीश्वर मंदिर

* तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर जिस चोल शासक के काल में निर्मित हुआ था, वह था — राजराज प्रथम के

* चोलों का राज्य फैला था

— कोरोमंडल तट, दक्कन के कुछ भाग तक

* कावेरीपत्तन, महाबलीपुरम, कांची और तंजौर में से चोलों की राजधानी थी — तंजौर

* चोल प्रशासन की विशेषता थी — ग्राम प्रशासन की स्वायत्तता

* वह दक्षिण भारतीय राज्य जिसमें उत्तम ग्राम प्रशासन था — चोल

* चोलों के अधीन ग्राम प्रशासन के बहुत से व्योरे जिन शिलालेखों में हैं, वे हैं — उत्तर मेरुर में

* चोल शासकों के शासनकाल में उच्च प्रशासन का कार्य देखता था — टोट्ट वारियम्

* सही कथन है

— चोलों ने पाण्ड्य तथा चेर शासकों को पराजित कर प्रायद्वीपीय भारत पर प्रारंभिक मध्यकालीन समय में अपना प्रभुत्व स्थापित किया। चोलों ने दक्षिण-पूर्वी एशिया के शैलेंद्र साम्राज्य के विरुद्ध सैन्य चढ़ाई की तथा कुछ क्षेत्रों को जीता।

* चोल काल में निर्मित नटराज की कांस्य प्रतिमाओं में देवाकृति प्रायः

— चतुर्भुज है

* दक्षिण भारत के विशेषकर चोल युग के स्थापत्यों की विश्व में श्रेष्ठतम प्रतिमा-रचना माना जाता है — नटराज को

* चोल शासकों के समय में बनी हुई प्रतिमाओं में सबसे अधिक विख्यात हुई — नटराज शिव की कांसे की प्रतिमाएं

* शिव की 'दक्षिणामूर्ति' प्रतिमा उन्हें प्रदर्शित करती हैं

— शिक्षक के रूप में

* 72 व्यापारी, चीन में भेजे गए थे — कुलोत्तुंग-I के कार्यकाल में

* चोल, चेर, पल्लव एवं राष्ट्रकूट में से दक्षिण भारत का वह राजवंश जो अपनी नौसैनिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध था — चोल

संस्कृत-सामयिक घटना

- ★ चातुर्ग चोल, कदंब तथा कलचुरि राजवंशों में से वह जिसके शासक अपने शासनकाल में ही अपना उत्तराधिकारी घोषित कर देते थे
— चोल
- ★ चोल शासकों में जिसने बंगाल की खाड़ी को 'चोल झील' का स्वरूप प्रदान कर दिया, वह था
— राजेंद्र प्रथम
- ★ 'गौकोंडचोलपुरम' की स्थापना की थी
— राजेंद्र प्रथम ने
- ★ वह चोल शासक जिसे चोल गंगम नामक वृहद् कृत्रिम झील बनवाने का श्रेय दिया जाता है
— राजेंद्र प्रथम
- ★ वह चोल राजा जिसने जल सेना प्रारंभ की थी
— राजराज प्रथम
- ★ चोल शासक जिसने श्रीलंका के उत्तरी भाग पर विजय प्राप्त की।
— राजराज प्रथम
- ★ चोल राजाओं में वह जिसने सीलोन (Ceylon) पर पूर्ण विजय प्राप्त की थी
— राजेंद्र I
- ★ वह चोल राजा जिसने श्रीलंका को पूर्ण स्वतंत्रता दी और सिंहल राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया था
— कुल्लुत्तुंग I
- ★ सुमेलित हैं—
शब्द विवरण
एरिपति — भूमि, जिससे मिलने वाला राजस्व अलग से ग्राम जलाशय के रख-रखाव के लिए निर्धारित कर दिया जाता था।
तनियूर — स्थानीय प्रशासन में बड़े नगरों में अलग कुर्रम गठित करना।
घटिका — प्रायः मंदिरों के साथ संबद्ध विद्यालय
- ★ प्राचीन भारत का वह महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र जो उस व्यापार मार्ग पर था, जो कल्याण को बेंगी से जोड़ता था
— तगर
- ★ चातुर्ग वंश का सबसे महान शासक था
— पुलकेशिन द्वितीय
- ★ चोल, चातुर्ग, पात तथा सेन में से वह वंश जिसके द्वारा प्रायः महिलाओं को प्रशासन में उच्च पद प्रदान किए जाते थे
— चातुर्ग
- ★ चातुर्गों की राजधानी थी
— वातापी में
- ★ संस्कृत के कवि और नाटककार कालिदास का उल्लेख हुआ है
— पुलकेशिन II के ऐहोल अभिलेख में
- ★ प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में प्रायः 'यवनप्रिय' शब्द द्योतक था
— काली मिर्च का
- ★ संगम साहित्य में 'तोलकाप्पियम' एक ग्रंथ है
— तमिल व्याकरण का
- ★ शिल्पादिकारम का लेखक था
— इलंगो अडिगल

- ★ सुमेलित हैं—

सूची-I

सूची-II

तिरुक्कुरल	— दर्शन
तोलकाप्पियम	— व्याकरण
शिल्पादिकारम	— प्रेम कथा
मणिमेकलै	— वणिज कथा

- ★ ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में भारत तथा रोम के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंधों की सूचना प्राप्त होती है
— अरिकमेडु पुरास्थल की खुदाइयों से
- ★ अरिकमेडु, ताम्रलिप्ति, कोरके तथा बारबेरिकम में से वह बंदरगाह, जो पोडुके नाम से 'दी पेरिप्लस ऑफ दी इरिथ्रियन सी' के लेखक को ज्ञात था
— अरिकमेडु
- ★ रोमन बस्ती प्राप्त हुई है
— अरिकमेडु से
- ★ एम्फोरा जार होता है एक
— तंबा एवं दोनों तरफ हथियार जार
- ★ कदंब, चेर, चोल तथा पाण्ड्य राजवंशों में वह जिनका उल्लेख संगम साहित्य में नहीं हुआ है
— कदंब
- ★ चेर, चोल, पल्लव तथा पाण्ड्य में से वह जो तमिल देश के संगम युग का राजवंश नहीं था
— पल्लव
- ★ धार्मिक कविताओं का संकलन 'कुरल' है
— तमिल भाषा में
- ★ तमिल ग्रंथ जिसे 'लघुवेद' की संज्ञा दी गई है
— कुरल
- ★ तमिल रामायणम या रामावतारम का लेखक था
— कंबन
- ★ मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में सत्य कथन है
— तमिल क्षेत्र के सिद्ध (सिद्ध) ऐकेश्वरवादी थे तथा मूर्तिपूजा की निंदा करते थे, कन्नड़ क्षेत्र के लिंगायत पुनर्जन्म के सिद्धांत पर प्रश्न चिह्न लगाते थे तथा जाति अंधिग्राम को अस्वीकार करते थे।
- ★ सुमेलित हैं—
सूची-I सूची-II
गुप्त — देवगढ़
चंदेल — खजुराहो
चातुर्ग — बादामी
पल्लव — पनमलै
- ★ चतुर्वेदीमंगलम, परिषद, अष्टदिग्गज तथा मणिग्रामम् में से वह जो प्राचीन भारत में व्यापारियों का निगम था
— मणिग्रामम्
- ★ दक्षिणी भारत का प्रसिद्ध 'तक्कोलम का युद्ध' हुआ था
— चोल एवं राष्ट्रकूटों के मध्य
- ★ चोल साम्राज्य को अंततः समाप्त किया
— मलिक काफूर ने

सम-साहित्यिक पटना पत्र

- * संगम युग में 'उरैयूर' विख्यात था — सूती वस्त्र के केंद्र के रूप में
- * पाण्ड्य राज्य की जीवन रेखा थी — वेंगी नदी
- * संगम पत्तन जो पश्चिमी तट पर स्थित थे — नौरा, तोंडी, मुशिरि एवं नेलचेंडा
- * संगम कालीन साहित्य में बोन, बो एवं मन्नन प्रयुक्त होते थे — राजा के लिए
- * तृतीय संगम हुआ था — मदुरई में
- * प्रथम एवं द्वितीय संगम का आवोजन क्रमशः हुआ था — मदुरई एवं कपाटपुरम (अलैवाई) में
- * वह ऋषि जिसके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने दक्षिण भारत का आर्यकरण किया, उन्हें आर्य बनाया — अगस्त्य
- * सुमेतित हैं—
- सूची-I सूची-II
- चालुक्य — बादामी
- पल्लव — कांचीपुरम
- हर्ष — कन्नौज
- पाण्ड्य — मदुरई
- * वह चीनी यात्री जिसने चालुक्यों के शासनकाल में चीन एवं भारत के संबंधों का विवरण दिया है — महात्तलिन
- * चालुक्य, राजपूत, गुप्त एवं मौर्य में से वह राजवंश जिसने उत्तर भारत पर शासन नहीं किया है — चालुक्य
- * कदंब राजाओं की राजधानी थी — वनवासी
- * दक्षिण भारत का वह वंश जिसके राजा ने रोम राज्य में एक दूत 26 ई.पू. में भेजा था — पाण्ड्य
- * मीनाक्षी मंदिर स्थित है — मदुरई में
- * सुमेतित हैं—
- मीनाक्षी मंदिर — मदुरई
- वेंकटेश्वर मंदिर — तिरुमाल
- महाकाल मंदिर — उज्जैन
- बेलूर मठ — हावड़ा

प्राचीन साहित्य एवं साहित्यकार

- * 'इतिहास के पिता' की पदवी सही अर्थों में संबंधित है — हेरोडोटस से
- * मुद्राराक्षस का लेखक है — विशाखदत्त
- * साहित्य की शास्त्रीय पुस्तकें, जो गुप्त काल में लिखी गई थीं — अमरकोश, कामसूत्र, मेघदूत एवं मुद्राराक्षस

- * दशकुमारचरितम् के रचनाकार थे — दंडिन
- * 'कुमारसंभव' महाकाव्य लिखा — कालिदास ने
- * मातविकामिनित्र, अभिज्ञानशाकुंतलम्, कुमारसंभवम् तथा जानकीहरण में से वह नाटक जो कालिदास ने नहीं लिखा था — जानकीहरण
- * सुमेतित हैं—
- लेखक पुस्तक
- पाणिनि — अष्टाध्यायी
- वात्स्यायन — कामसूत्र
- चाणक्य — अर्थशास्त्र
- कल्हण — राजतरंगिणी
- * कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी संबंधित है — कश्मीर के इतिहास से
- * 'अष्टाध्यायी' लिखी गई है — पाणिनि द्वारा
- * सुमेतित हैं—
- लेखक रचनाएं
- भारवि — किरातार्जुनीयम्,
- हर्ष — नागानंद
- कालिदास — मातविकामिनित्रम्
- राजशेखर — कर्पूरमंजरी
- * संस्कृत की रचनाएं, जिन्होंने महाभारत से अपना कथासूत्र लिया है — नैषधीयचरित, किरातार्जुनीयम् एवं शिशुपाल वध
- * सुमेतित हैं—
- सूची-I सूची-II
- विशाखदत्त — नाटक
- वाराहमिहिर — खगोल विज्ञान
- चरक — चिकित्सा
- ब्रह्मगुप्त — गणित
- * 'चरक संहिता' नामक पुस्तक संबंधित है — चिकित्सा से
- * वराहमिहिर की पंचसिद्धान्तिका आधारित है— यूनानी ज्योतिर्विद्या पर
- * सुमेतित हैं—
- कालिदास — रघुवंश
- भास — स्वप्नवासवदत्तम्
- बाणभट्ट — कदंबरी
- हर्ष — रत्नावली
- * 'मिलिंदपन्हो' — पात्नी ग्रंथ है

संस्कृत-सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तर

- * बौद्ध ग्रंथ 'मिलिंदपन्हो' जिस हिन्दू-यवन शास्त्र पर प्रकाश डालता है, वह है

— मिर्ज़े

- * 'मिलिंदपन्हो' राजा मिलिंद तथा एक बौद्ध भिक्षु के मध्य संवाद रूप में है। वह भिक्षु थे

— नागसेन

- * वह स्रोत जो प्राचीन भारत के व्यापारिक मार्गों पर मौन है—मिलिंदपन्हो

- * सुमेलित हैं—

दरबारी कवि	राजा
अमीर खुसरो	— अलाउद्दीन खिलजी
कालिदास	— चंद्रगुप्त द्वितीय
हरिषेण	— समुद्रगुप्त
बाणभट्ट	— हर्षवर्द्धन

- * 'राजतरंगिणी' के लेखक कल्हण के समय शासक था — जयसिंह

- * कल्हण कृत राजतरंगिणी में कुल तरंग हैं — आठ

- * कल्हण की राजतरंगिणी को आगे बढ़ाया — जैनराज एवं श्रीधर ने

- * 'सौंदरानंद' रचना है — अश्वघोष की

- * 'नागानंद', 'रत्नावली' एवं 'प्रियदर्शिका' के लेखक थे — हर्षवर्द्धन

- * अमरकोश, सिद्धांतशिरोगणि, वृहत्संहिता तथा अष्टांगहृदय में से वह जो विश्वकोषीय ग्रंथ है — वृहत्संहिता

- * सुमेलित हैं—

मृच्छकटिकम्	— शूद्रक
बुद्धचरित	— अश्वघोष
मुद्राराक्षस	— विशाखदत्त
हर्षचरित	— बाणभट्ट

- * सुमेलित हैं—

ग्रंथकार	मूलग्रंथ
वाराहमिहिर	— वृहत्संहिता
विशाखदत्त	— देवीचंद्रगुप्तम्
शूद्रक	— मृच्छकटिकम्
बिल्हण	— विक्रमांकदेवचरित

- * सुमेलित हैं—

कर्पूरमंजरी	— राजशेखर
मालविकाग्निमित्र	— कालिदास
मुद्राराक्षस	— विशाखदत्त
सौंदरानंद	— अश्वघोष

- * 'शाकुंतलम्' लिखा है — कालिदास ने

- * मृच्छकटिकम्, मेघदूतम्, ऋतुसंहार एवं विक्रमोर्वशीयम् में से कालिदास की साहित्यिक कृति नहीं है — मृच्छकटिकम्

- * कालिदास द्वारा रचित 'मालविकाग्निमित्र' नाटक का नायक था — अग्निमित्र

- * वह पुस्तक जिसमें शुंग राजवंश के संस्थापक के पुत्र की प्रेम कहानी है — मालविकाग्निमित्र

- * 'स्वप्नवासवदत्ता' के लेखक हैं — भार्गव

- * गीत गोविंद के रचयिता जयदेव अतंकृत करते थे — लक्ष्मणसेन की समा को

- * सुमेलित हैं—

रचनाएं	विषय
अष्टांग-संग्रह	— आयुर्विज्ञान
दशरूपक	— नाट्यकला
लीलावती	— गणित
महाभाष्य	— व्याकरण

- * 'तुम्हारा अधिकार कर्म पर है, फल की प्राप्ति पर नहीं', वह वाक्य जिस ग्रंथ का है, वह है — गीता

- * 'जो यहां है वह अन्यत्र भी है, जो यहां नहीं है वह कहीं नहीं है' यह कहा गया है — महाभारत में

- * प्राचीन भारत का वह ग्रंथ जिसका 15 भारतीय एवं चात्सीस विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ — पंचतंत्र

- * पंचतंत्र' मूल रूप से लिखी गई — शिशु शर्मा द्वारा

- * सुमेलित हैं—

लेखक	ग्रंथ
सर्ववर्मा	— कातंत्र
शूद्रक	— मृच्छकटिकम्
विज्ञानेश्वर	— मितक्षरा
कल्हण	— राजतरंगिणी

- * आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कर तथा लल्ल में से वह जो बीजगणित के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए विशेष रूप से जाना जाता है — भास्कर

- * गणित की पुस्तक 'लीलावती' के लेखक थे — भास्कराचार्य

- * आर्यभट्ट थे — भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री

- * वह भारतीय गणितज्ञ जिसने दशमलव के स्थानिक मान की खोज की थी — आर्यभट्ट ने

- * 'मत्त विलास प्रहसन' का लेखक था — महेंद्र वर्मन

- * 'मनुस्मृति' मुख्यतया संबंधित है — समाज-व्यवस्था से

सम-सामयिक घटना

* भारत का प्रथम विधिनिर्माता माना जाता है

— मनु को

* शून्य का आविष्कार किया था

— किसी अज्ञात भारतीय ने

* सुमेरित हैं—

लाइफ ऑफ हवेन सिबांग : हुइ-ली

द नैचुरल हिस्ट्री : प्लिनी

हिस्टोरियल फिलिपिकल : पाम्पेइस ट्रोगस

द हिस्टरीज : हेरोडोटस

* सितार, वीणा, सरोद तथा तबला में से सबसे प्राचीन वाद्य यंत्र है

— वीणा

पूर्व मध्यकाल (800-1200 ई.)

* 'पृथ्वीराज चौहान' के नाम से प्रसिद्ध हैं

— पृथ्वीराज तृतीय

* ताम्रपत्र लेख दर्शाते हैं कि प्राचीन काल में बिहार के राजाओं का संपर्क था

— जावा-सुमात्रा से

* गोविंदचंद्र गहड़वाल की एक रानी कुमारदेवी ने धर्मचक्र-जिन बिहार बनवाया था

— सारनाथ में

* हमीर महाकाव्य में चौहानों को बताया गया है

— सूर्यवंशी

* आल्हा-ऊदल संबंधित थे

— महोबा से

* 'पृथ्वीराज रासो' के लेखक हैं

— चंदबरदाई

* 'पृथ्वीराज विजय' के लेखक हैं

— जयानक

* सुमेरित हैं—

सारंगदेव - हमीर रासो

चंदबरदाई - पृथ्वीराज रासो

जगनिक - आल्हाखंड

नरपति नाल्ह - बीसलदेव रासो

* राजपूत वंशों में से वह जिसने, आठवीं शताब्दी में, दिल्ली (देहली) शहर की स्थापना की थी

— तोमर वंश

* जेजाकभुक्ति प्राचीन नाम था

— बुंदेलखंड का

* पुंड्रवर्धन भुक्ति अवस्थित थी

— उत्तर बंगाल में

* पाल वंश का संस्थापक था

— गोपाल

* सोमपुर महाविहार का निर्माण कराया था

— धर्मपाल ने

* उस पाल शासक का नाम बताइए जिसने विक्रमशिला विश्वविद्यालय स्थापित किया

— धर्मपाल

* विक्रमशिला विश्वविद्यालय अवस्थित था

— बिहार में

* राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव रखी

— दक्षिण में

* 'हिरण्य-गर्भ' धार्मिक कार्य कराया था

— दक्षिण में

* अपने पिता के अभियानों के क्रम में सैनिक छावनी में पैदा हुआ था

— जमोघवर्ष राष्ट्रकूट

* महानतम प्रतिहार राजा था

— मिहिरभोज

* महान जैन विद्वान हेमचंद्र, अलंकृत करते थे— कुमारपाल की सभा को

* धर्मपाल, देवपाल, विजयसेन तथा लक्ष्मणसेन में से वह जिसे एक नया संवत चलाने का यश प्राप्त है

— लक्ष्मणसेन

* लक्ष्मण संवत् का प्रारंभ किया गया था

— सेनों द्वारा

* मध्यकालीन भारत के प्रसिद्ध विधिवेत्ता थे

— विज्ञानेश्वर, हिमाद्रि एवं जीमूतवाहन

* महान संस्कृत कवि एवं नाटककार राजशेखर संबंधित थे

— महेन्द्रपाल प्रथम के दरबार से

* सुमेरित हैं—

सूची-I

सूची-II

प्रतिहार

— कन्नौज

चोल

— तंजौर

परमार

— धारा

सोलंकी

— अन्हिलवाड़

* गुर्जर-प्रतिहार वंश की स्थापना की थी

— नागभट्ट प्रथम

* प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट तथा चोल में से वह जो त्रिकोणात्मक संघर्ष का हिस्सा नहीं था

— चोल

* महोदया पुराना नाम है

— कन्नौज का

* 'नगर महोदय श्री' के नाम से जाना जाता था

— कन्नौज को

* चामुंडराय, जयसिंह सिद्धराज, कुमारपाल तथा महिपाल देव में से वह जिसने खंभात में तोड़ी गई मस्जिद के पुनर्निर्माण के लिये आर्थिक सहायता प्रदान की थी

— जयसिंह सिद्धराज

* राजा भोज ने शासन किया

— धार पर

* 'भोजशाता मंदिर' की अधिष्ठात्री देवी हैं

— भगवती सरस्वती

* गौडवहो के रचयिता थे

— वात्पति

* सुमेरित हैं—

प्रसिद्ध स्थान

क्षेत्र

बोधगया

— बिहार

खजुराहो

— बुंदेलखंड

शिरडी

— अहमदनगर, महाराष्ट्र

नासिक

— महाराष्ट्र

तिरुपति

— रायल सीमा (आंध्र प्रदेश)

* मध्यकालीन भारत के आर्थिक इतिहास के संदर्भ में शब्द 'अरघट्टा' (Araghatta) निरूपित करता है

— भूमि की सिंवाई के लिए प्रयुक्त जलवक्र (वाटर हील) को

अतिरिक्त

23